साप्ताहिक

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

समय माया

R.N.I. No.: MPHIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

Cell: +91 9425125569
+91 9479535569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission

In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष 18 | अंक 11 | प्रति सोमवार, इंदौर, 14 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2024 | पृष्ठ 8 | मूल्य 5/- रुपए

दुनिया में शांति के लिए अमेरिका का बहिष्कार करो

यूक्रेन-रूस, इसराइल-हमास युद्ध रोकने सभी करें प्रयास

षड़यंत्रकारी अमेरिका हथियार बांट कर रहा सबको कमजोर करने की कर रहा साजिश

वर्तमान में धरती पर चल रहे इसराइल हमास और रूस यूक्रेन युद्ध के षड्यंत्र में विश्व का सबसे बड़ा हथियार उत्पादक देश अपने हथियार बेच उनका परीक्षण करने और दुनिया को उन हथियारों के परीक्षण से उत्पन्न परिणाम और विनाश के तांडव का प्रदर्शन कर संकर प्रजाति का अमेरिका सबसे बड़ी भूमिका निभा रहा है उसे विश्व में जितने ज्यादा युद्ध होंगे उसके देश के हथियार उत्पादक कंपनियां अधिकतम हथियार बनाकर बेचने में अधिकतम मोटा लाभ कमाएंगी। इसलिए उसे पीड़ित होती मानवता बच्चे बुजुर्गों महिलाओं की मौत और रक्तपात से भी आनंद मिल रहा है।

विश्व में कहीं भी युद्ध और रक्तपात होने का तात्पर्य है कि केवल उसे युद्ध लड़ने वाले सैनिक और पुरुष हीखत नहीं होते बल्कि उनसे जुड़े हुए उनके परिवारों की महिलाएं बुजुर्ग और बच्चे सभी पीड़ित होते और रक्तपात झेलते हैं।

यथार्थ में रूस और यूक्रेन के बीच में युद्ध का मूल कारण

एक तरफ जेंलेंस्की को उकसाकर नाटो में शामिल करने का वादा और स्व उत्पन्न परिस्थितियों से निपटने के लिए रूस युद्ध करने के लिए मजबूर हो गया। यह युद्ध चलते-चलते ढाई साल गुजर जाने के बाद निष्कर्ष तो डर केवल रक्तपात बढ़ रहा है। दूसरी तरफ हमास ने हीं जान बूझ कर अपनी सेंड तैयारी कर इसराइल को कमजोर समझ जो उस पर आक्रमण कर उनकी महिलाओं बच्चों के साथ में जो दुष्कृत्य किया। तो मजबूरन जवाब देने के लिए युद्ध करना पड़ा। यदि हमास हमला करना रोक दे तो न केवल हमास के साथ उनसे जुड़े हुए लेबनान सीरिया ईरान में शांति स्थापित की जा सकती है। मानवता घायल हो रही है के साथ पूरे विश्व का जलवायु पशु-पक्षी पर्यावरण भी सब बर्बाद हो रहा है। जिसका परिणाम पूरे धरती पर बसे विश्व की जनता के साथ पशु पक्षियों जीव जंतुओं से लेकर जल, थल, वायुमंडल को भी भुगतना पड़ रहा है।

बेशक संकर अमेरिका वहां के अहंकारी राष्ट्रपति बिड़ेन उसके हथियार उत्पादक कंपनियों के दम पर युक्रेन को नाटो में शामिल कर उसके ठीक निकट पहुंचकर रूसी देश में अपना सैन्य अड्डा स्थापित कर पुतिन को हटाने का षड्यंत्र कर रहा है।

इसके पूर्व में भी अमेरिका ने वियतनाम चिल्ली इराक अफगानिस्तान और कई अन्य देशों मेंइन सड़क अधिकारी नीतियों का उपयोग किया और मुंह की खाकर लौटे। परंतु संकर प्रजाति के अमेरिका के सारे राष्ट्रपति चाहे वह डेमोक्रेटिक हो या रिपब्लिक वहां के जालसाज षड़यंत्रकारी हथियार, औषधि, इलेक्ट्रॉनिक्स इलेक्ट्रिकल्स ऑटोमोबाइल पेट्रोलियम उत्पादक कंपनियों जिनके चंदे से वे राष्ट्रपति बनते हैं के इशारे पर नाच कर उनके मोटे व्यवसाय के लिए विश्व के अन्य प्रतियोगी राष्ट्रों के विरुद्ध षड्यंत्र करना अपने कानून ठोकना, अपने व्यवसाय की शर्तें ठोक कर मोटा लाभ कमाना जो उनकी शर्तों ना माने उसके विरुद्ध षड्यंत्र कर वहां युद्ध ठोका उनकी पुरानी रणनीति का हिस्सा है। और इसी रणनीति को पूरा करने के लिए अमेरिका ने आजू-बाजू के लगभग 25 से ज्यादा देशों को अपने गुंडागर्दी के समूह नाटो में शामिल कर एक तरफ उनकी सुरक्षा के लिए अपनी सेनायें उनके राष्ट्रो में इसलिए पिछले 80 वर्षों से पाली जा रही है। जिसमें जर्मनी जापान ब्रिटेन जैसे राष्ट्र भी शामिल हैं। जो अपने युद्ध वह अन्य वेबसाइट डकैती डालने विश्व के अन्य राष्ट्रों में वहां की जान संसाधनों का उपयोग करने षड़यंत्रकारी नीतियों को सही ठहरने के लिए उसकी हां में हां करते हैं।

(शेष पेज 6 पर)

क्या मोदी कश्मीर से लद्दाख पूर्वोत्तर भारत चीन को सौंपने का कर रहे षड़यंत्र

सोनम वांगचुक की अपेक्षा देशहित पर पड़ेगी भारी

यदि सोनम चीन की गोदी में बैठ जाएं तो कश्मीर से लद्दाख, सिक्किम, पूर्वोत्तर मणिपुर तक आसानी से चीन हजम करेगा

भारत में पिछले 10 साल से सत्ता संभालने के बाद मूढ़, घोर भ्रष्ट स्वार्थी मक्कार निकंमें पूंजीपति और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रखेले मोदी ने राष्ट्र की आर्थिक सामाजिक भौगोलिक हर स्तर पर बर्बादी की।

जनता पर एक तरफ 1500 से ज्यादा वस्तुओं व सेवाओं पर 5 से 28% का माल एवं सेवा कर ठोक कर जनता को लूटा तो दूसरी तरफ देश की राष्ट्रीय प्राकृतिक व मानव निर्मित संपत्तियों, खनिजों, नदियों उसके जल, पर्वतों, जन, जंगल, जानवरों जमीन जलवायु को मोटा कमीशन खाकर बहुराष्ट्रीय कंपनी और पूंजीपति मित्रों को सोंपा, गिरवी किया बेंचा, वही हाल शासकीय उद्योगों, उपक्रमों, सेवाओं जिसमें हवाई अड्डा बंदरगाहों से लेकर तेल भेल बेल गेल सेल रेल की पटरियों से लेकर भूमि यात्री व मालवाहक ट्रेन रेलवे स्टेशनों, राजमार्गों तक को भी बेंचा, गिरवी किया, पट्टे पर दे, जनता को दोगुनी से 10 गुनी तक लूटने व लुटवाने की खुली छूट दी। बहुर्राष्ट्रीय कंपनियों पूंजीपति मित्रों के साथ चीन से मोटा कमीशन खाकर शत्रु चीन के मोटे फायदे और उद्योगों को चलाने के लिए (शेष पेज 2 पर)

विद्युत कंपनियों के खंबो पर केवल का जाल क्यों

एमडी-सीजीएम से लेकर सीई, एसई, डीई तक हर कदम भ्रष्टाचार

अनाधिकृत टीवी फोन इंटरनेट कंपनियों के केवल दे रहे दुर्घटनाओं को अंजाम

देश के राज्यों के अमेरिकी विश्व आतंकी व्यापार संगठन के इशारे पर सन 2000 में अटल बिहारी की सरकार के समय राज्य विद्युत मंडलों को जनता को मनमानी कीमत पर बिजली बेंचने लूटने वह हर कदम हर प्रकार के कार्यों में भारी भ्रष्टाचार व लूट का तांडव करने के लिए कंपनियों में बांट दिया गया। उन कंपनियों में प्रबंध संचालक मुख्य महा प्रबंधक के रूप में देश व राज्यों की घोर धूर्त भ्रष्ट और जालसाज प्रताड़ना सेवा के अधिकारियों को पदस्थ कर दिया गया जिनका बिजली की तकनीकी से कोई लेने देना ही नहीं था। वैसे भी भारतीय प्रताड़ना सेवा के अधिकारियों के बारे में व्यावसायिक, वह अन्य क्षेत्रों में माना जाता है कि ये वो शाख के उल्लू है जहां पर इनको बैठा दिया जाएगा वह पूरा पेड़ व जंगल ही खत्म कर देंगे।

(शेष पेज 3 पर)

साप्ताहिक समय माया

संपादकीय

आत्म परिवार समाज और राष्ट्र सुरक्षा के लिए हथियार जरूरी

दुनिया के जंगल में जीने के लिये, छल, बल, दल, के साथ अपनी, परिवार, समाज व राष्ट् की रक्षा के लिये हथियार होना, धन से ज्यादा जरूरी है। धन का संदूक उठाने से अच्छा है बंदूक उठा लो- गोपाल चन्द्र मुखोंपाध्याय। भगवा पहन लिया, जोर जोर से जय श्री राम के नारे लगा, सेल्फियां लेकर सोशल मीडिया पर लाइक हासिल करने से आपकी रक्षा नहीं होगी। हिंदुओं ने सोचा विदेश में जायेंगे तो खुश रहेंगे। सच्चाई ये है कि वहां भी पीट रहे हैं क्योंकि हिंदुओं ने प्रकृति का नियम नहीं समझा। यह प्रकृति कोई बगीचा नहीं है कि पैसा कमाओगे, आलीशान घर बनाओगे और चैन की नींद सो लोगे। यह प्रकृति एक जंगल है जिसमें जंगली लुटेरे, चोर, डाकू चौबीसों घंटे, 365 दिन सभ्य लोगों को लूटने की फिराक में रहते है। हिंदुओं ने सब कुछ बनाया, लेकिन अपनी सुरक्षा के लिए कभी हथियार नहीं खरीदे। अगर हथियार खरीद लिए होते तो न पाकिस्तान से पलायन करना पड़ता, न कश्मीर से और अब ना ळख से। सोचिए- जहां आप जाने का सपना रखते हैं UK उस देश में भी आप सुरक्षित नहीं हैं क्या करेंगे ऐसे बंगले का, जिसे एक दिन जेहादी लूट ही लेंगे अपनी सुरक्षा के लिए पहले हथियार खरीदो। शांतिदूत ने 57 देशों पर यूं ही राज कायम नहीं किया, उनके कांसेप्ट बिलकुल क्लियर है। वे इस दुनिया को जंगल समझते है और इस जंगल में वही राजा होगा जो दूसरों का शिकार करना जानता है। जब तक तुम शिकार करना नहीं सीखोगे तब तक कोई और तुम्हारा शिकार करता रहेगा। इसीलिए पूरे विश्व के हिंदुओं से यह आग्रह है कि सबसे पहले हथियार खरीदिए। उसके बाद गाड़ी, बंगला, बैंक बैलेंस सब कुछ वरना जेहादी जो आज झोंपड़ी में रह रहा है वो उसके हथियार का प्रयोग करके आपसे वो सब कुछ छीन लेगा, जिसके लिए आपने जीवन भर तपस्या की है। पहली फुरसत में हथियार खरीदो, कल से जिन 5 मंदिरों में जाओगे, वहां पर देवी देवताओं की मूर्ति का अच्छे से अवलोकन करोगे। उनके हाथ में क्या है ये गौर करोगे आपको हथियार दिखेगा ये मेरा दावा है। आप 5 मंदिर जाओ कम से कम 4 मंदिरों में आपको देवताओं के हाथ में हथियार जरूर मिलेगा, ये सिग्नल है ये संदेश है। जब कोई जेहादी आपको मार देगा और आप भगवान के पास जाकर बोलोगे कि भगवान आपने हमारी रक्षा क्यों नहीं की। तब भगवान बोलेंगे, जिस मंदिर को तू जाता था वहां पर मेरे हाथ में तलवार थी। तूने उसको देखा ही नहीं मैं तो संदेश दे रहा था, तलवार खरीद, लेकिन तूने उस संदेश को समझा ही नहीं, ये तेरी गलती है। भगवान भी तुम्हें सिग्नल दे रहे हैं यह दुनिया एक जंगल है इसीलिए जंगली बनो। क्या तुमने कभी सोचा है कि अमेरिका दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश क्यों है। क्यों दुनिया के सारे देश मिलकर भी अमेरिका पर कब्जा नहीं कर सकते? वह इसीलिए क्योंकि वहां प्रत्येक नागरिक के पास बंदूक है, हिटलर ने कहा था अगर आप किसी देश पर कब्जा करना चाहते हो तो सबसे पहले उसके नागरिकों से हथियार छीन लो। शरिया भी यही कहता है शरिया के अनुसार किसी भी गैर मुस्लिम को अपनी सुरक्षा के लिए हथियार रखने की इजाजत नहीं है। ये सब संदेश हैं ये सब सिग्नल हैं सभी तुम्हें कोई इशारा कर रहे हैं इस संदेश को समझो। भाईचारे और आदर्शवाद के संदेश बातों में ही अच्छे लगते हैं। वास्तविकता में नहीं, आज जो आपसे हंस के बात कर रहा है हो सकता है वही कल आपका काम लगा दे। जेहादियों का पहला ध्यान हथियार खरीदने में ही रहता है उसका पहला इन्वेस्टमेंट हथियार होता है। वो गाड़ी, बंगले में ध्यान देता ही नहीं, वो जानता है कि जिस दिन वो सामने वाले की कनपटी पर बंदूक रखेगा, सामने वाला हंसते हंसते जर, जोरू, जमीन, जान उसकी झोली में डालेगा। यही प्रकृति का नियम है ताकतवर बनो, हथियार खरीदो और जरूरत पड़ने पर हथियार चलाकर राक्षसों का वध करो। केवल दुर्गा और काली की आराधना करने से क्या होगा। उसका 10% भी अपने आचरण में उतार लिया तो जीवन बच सकता है, इसलिए किन्तु परन्तु छोड़कर आत्मरक्षा के लिए हथियार खरीदो। गर्व से कहो हम हिन्दू हैं कहने से कोई लाभ नहीं, तिलक जनेऊ धारण करने से कुछ नहीं होगा। तिलक और बिंदी तभी तक सुरक्षित है,जब तक तुम्हारे पास हथियार है। इसलिए हे आर्य पुत्रों सबसे पहले हथियार खरीदो जिससे अपने घर परिवार की इज्जत, धर्म और अपने आत्मसम्मान की रक्षा करो !

सोनम वांगचुक की अपेक्षा देशहित पर पड़ेगी भारी

पेज 1 का शेष

देश में सफाई नगदीहीन नोटबंदी जीएसटी और तालाबंदी कर जिसके 10 करोड़ से ज्यादा उद्योगों दुकानों मंडियों बाजारों मैं कार्यरत 40 करोड़ से ज्यादा लोगों को बेरोजगार कर चीन के माल की मनमानी कीमत पर बिक्री को चार गुना कर देश की अर्थव्यवस्था को विभिन्न स्रोतों से प्राप्त विदेशी मुद्रा को लगभग 110 लाख करोड़ का खिलौनों से लेकर भारी मशीनों को ठेकेदारी के माध्यम से तू नुकसान पहुंचा ही जा रहा है। परंतु एक तरफ भारतीय सेना को बुरी तरीके से कमजोर कर 40 दिन के गोला बारूद को घटाकर 10 दिन के गोला बारूदकी व्यवस्था की गई साथ ही जो जल थल नभ सेवा में 35-40 लाख सैनिक कर्मी हुआ करते थे। उनको भी घटाकर 15 लाख पर ले आया गया।

राजनीतिक स्तर पर भी भारत के उत्तर में लद्दाख सिक्किम भूटान से लेकर असम अरुणाचल प्रदेश मेघालय मणिपुर तक जो भारत के हिस्से हैं। उसमें भी चीन ने न केवल उनको अपने हिस्से में दिखाना शुरू किया और उसके विरुद्ध भारत की विदेश मंत्रालय से लेकर गृह मंत्रालय तक किसी ने कोई आवाज नहीं उठाई। जबकि आसाम अरुणाचल प्रदेश आदि में भी वह सेकंड किलोमीटर अंदर घुसकरअपने उद्योग गांव कॉलोनी बसाने के साथ वहां पर भी तांडव करने के बाद में भी भारत सरकारके मोदी ने खुले में बोल दिया कि हमारे यहां किसी ने अतिक्रमण नहीं किया है ना ही कोई घुसा हुआ है जबकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और सारे उपग्रह की तस्वीर बताती है कि वह भारत की सीमाओं में घुसकरन केवल गांव उद्योग लग रहा है बल्कि उसने और रेलवे हेलीपैड आदि तक बना लिया हैपर मोदी के मुंह से आवाज नहीं निकल रही और अब अगर सोनम वांगचुक लद्दाख को बचाने वैधानिकता प्रदान करने के लिए आवाज उठा रहे हैं जो हजार किमी पैदल चलकर आने के बाद में भी पिछले 20 दिन से उन्हे बार-बार गिरफ्तार कर उनका अपमान किया जा रहा है। जो देश के हितों के प्रति अत्यधिक घातक होगा। जो व्यक्ति इतना शिक्षित समझदार वैज्ञानिक पर्यावरण होने के बाद भी भारत के प्रति हर तरह से समर्पित होने अपने प्रदेशव जनता के प्रतिउसकी भलाई और राष्ट्रीय भलाई के लिए आवाज उठाने के बाद उसके साथ में जिस बदतमीजी की पूर्ण तरीके से उन्हें आंदोलन करने की आवाज सुनने उनकी बातों को समझने के लिएकिसी शासकीय व्यक्ति ने अभी तक संपर्क तो करने की बात भूल गई बार-बार पुलिस द्वारा प्रताड़ित कर ऐसे अपमानित कर रही है जैसे शत्रु हों। दूसरी तरफ यदि वही सोनम वांगचुक चीन की गोदी में जाकर बैठ जाएं तो भारत के हाथ से न केवल सिक्किम लद्दाख बल्कि पूरा उत्तरी पूर्वी भारत के सभी राज्यों को भी चीन हजम करने तैयार बैठा हुआ है। और भाई है खेल अकेले भारत के साथ ही नहीं खेल रहा बल्कि उसके देश से जुड़ी 17-18 राष्ट्रों की सीमाओं जिसमें बर्मा, म्यांमार, उत्तरी-दक्षिणी कोरिया, ताइवान जापान के साथ में भी वह यही करता है यह उसकी ऐतिहासिक वाद विवाद उत्पात कर हड़पो नीति का हिस्सा हैं।

पर्यावरणविद ने कहा कि उनका अनशन 'सत्य, पर्यावरण और लोकतंत्र की लड़ाई' है, जबकि अन्य लोग 'हिमालय के लिए जन आयोग' की मांग कर रहे हैं

पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक, जो वर्तमान में भारतीय संविधान की छठी अनुसूची के कार्यान्वयन और केंद्र शासित प्रदेश (यूटी) लद्दाख को राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर 21 दिनों के उपवास पर हैं, ने 24 मार्च, 2024 को कहा कि उनके आंदोलन का उद्देश्य पिछले कुछ दशकों में हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और सिक्किम जैसे अन्य हिमालयी क्षेत्रों में हुई त्रासदियों को इस नाजुक ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में होने से रोकना है।

उपवास के कारण कमजोर लग रहे वांगचुक, विकल्प संगम, पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज (पीयूसीएल) और नेशनल अलायंस ऑफ पीपुल्स मूवमेंट्स सहित नागरिक समाज संगठनों द्वारा आयोजित एक वेबिनार को संबोधित कर रहे थे।

वांगचुक ने कहा, 'लद्दाख के लिए यह उपवास अब सच्चाई, पर्यावरण और लोकतंत्र के लिए लड़ाई है। जब हम (2019 में) केंद्र शासित प्रदेश बने, तो हमारी उम्मीद थी कि भारतीय संविधान की छठी अनुसूची इस भूमि, इसकी हवा और पानी के साथ-साथ इसके स्वदेशी आदिवासी लोगों को आवश्यक सुरक्षा प्रदान करेगी, जो आबादी का 97 प्रतिशत हिस्सा हैं।'

उन्होंने आगे कहाः सत्ताधारी पार्टी (नई दिल्ली में) ने 2019 के लोकसभा चुनावों के साथ-साथ स्थानीय परिषद चुनावों के लिए अपने घोषणापत्र में इसका वादा किया था। लेकिन कुछ साल बाद, इन वादों के बारे में याद दिलाना भी अपराध बन गया क्योंकि इसके लिए धमकियों और डराने-धमकाने जैसे प्रतिशोध को आमंत्रित किया गया। अगर आप चुनावी लाभ के लिए कुछ वादा करते हैं और फिर उसे भूल जाते हैं, तो सरकार या लोगों की ओर से कोई जवाबदेही नहीं बचेगी। तब भारत एक केला गणराज्य बन जाएगा। वांगचुक ने पूछा, तब हमारी अंतरराष्ट्रीय स्थिति क्या होगी?

उन्होंने यह भी दावा किया कि लद्दाख के साथ अब 'एक उपनिवेश की तरह व्यवहार किया जा रहा है'। वांगचुक ने कहा, 'एक कमिश्नर या डिप्टी गवर्नर, जिसका स्थानीय लोगों से कोई संबंध नहीं होता, आमतौर पर तीन साल तक क्षेत्र पर शासन करता है और फिर चला जाता है। उनके गैर-लद्दाखी होने में कोई समस्या नहीं है। हालांकि, भले ही उनके इरादे अच्छे हों, वे क्षेत्र के संदर्भ को नहीं समझेंगे।'

2018 मैग्सेसे पुरस्कार विजेता के अनुसार, लद्दाख एक ऐसा परिदृश्य है जो पृथ्वी से अधिक मंगल ग्रह जैसा दिखता है।

अच्छे इरादे वाले शासक गलतियाँ करेंगे, जिसका खामियाजा लद्दाखियों को भुगतना पड़ेगा। बुरे इरादे वाले नौकरशाह संभवतः पहाड़ों, घाटियों और हमारे अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र को कॉर्पोरेट्स को बेच देंगे।

उन्होंने कहा, 'हमारे पास कुछ भी नहीं बचेगा। हमने देखा है कि हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और सिक्किम में क्या हुआ है। हम चाहते हैं कि यहां भी ऐसी घटनाएं न हों।'

उन्होंने कहा कि उनके शुभचिंतक उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हैं, 'क्योंकि उनका कहना है कि इस आंदोलन के लिए मेरा फिट रहना महत्वपूर्ण है।'

वांगचुक ने बताया , 'इसलिए हम 'रिले उपवास' पर विचार कर रहे हैं। मेरे बाद, महिलाएं 10 दिनों तक उपवास रखेंगी, उसके बाद युवा, भिक्खु (बौद्ध भिक्षु), बुजुर्ग और खानाबदोश (जैसे चांगपा) उपवास करेंगे।'

उन्होंने कहा कि लद्दाख एक संवेदनशील और रणनीतिक सीमा क्षेत्र है, जहां भारत पाकिस्तान और चीन से भिड़ रहा है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि केंद्र स्थानीय लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखे, न कि उन्हें अलग-थलग करने की कोशिश करे।

वांगचुक ने लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा देने पर भी सवाल उठाया, लेकिन छठी अनुसूची या राज्य का दर्जा देने से इनकार कर दिया। उन्होंने पूछा, 'हम बस यही मांग कर रहे हैं कि हमारी अपनी विधायिका होनी चाहिए, जहां लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधि कानून बना सकें और लोगों के आदेश के अनुसार शासन कर सकें। इसमें गलत क्या है?'

वेबिनार को लद्दाख (लेह और कारगिल जिले) के साथ-साथ देश भर के कई अन्य वक्ताओं ने संबोधित किया। लद्दाखी वक्ताओं में कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस के सज्जाद हुसैन कारगिली और मुस्तफा हाजी; स्नो लेपर्ड कंजर्वेंसी ट्रस्ट के त्सेवांग नामगेल; लेह एपेक्स बॉडी के चेरिंग दोरजे; लोकल फ्यूचर्स लद्दाख के कुंजांग देचेन और नेचर कंजर्वेशन फाउंडेशन के कर्मा सोनम शामिल थे। नर्मदा बचाओ आंदोलन की मेधा पाटकर, मजदूर किसान संघर्ष समिति की अरुणा रॉय, लेखक-कार्यकर्ता हर्ष मंदर, भारत ज्ञान विज्ञान समिति (बीजीवीएस) के ओम प्रकाश भूरायता और विजय भट्ट, पीपुल्स वॉच के हेनरी टिपाघने, पीएएचएआर के शेखर पाठक, स्तंभकार और लेखक अपूर्वानंद और पीयूसीएल के मिहिर देसाई और सुरेश वी अन्य वक्ता थे।

नमगेल ने लद्दाख के अद्वितीय परिदृश्य और जैव विविधता पर जोर दिया, जो भारत के ट्रांस-हिमालयी जैव भौगोलिक क्षेत्र के 90 प्रतिशत से अधिक का घर है।

उन्होंने कहा, 'लद्दाख का वन्यजीव सदियों से इसके सुदूर पहाड़ों और घाटियों में लोगों का भरण-पोषण करता आ रहा है। हिम तेंदुआ जंगली भेड़ों और बकरियों (भरल या नीली भेड़, मार्खोर और आइबेक्स जैसे कैप्रिड्स) की आबादी को नियंत्रित करता है। इससे अत्यधिक चराई पर रोक लगती है, जो बदले में ढलानों पर पौधों के पुनर्जनन को बढ़ावा देती है। और इससे बाढ़ को रोका जा सकता है। इसलिए, आप हिम तेंदुओं की आबादी और बाढ़ के बीच पारिस्थितिक संबंध देख सकते हैं।'

नमगेल ने कहा कि एशियाई महाद्वीप की अधिकांश नदियाँ हिमालय या उच्च एशिया (लद्दाख सहित) से निकलती हैं, जिसे तीसरा ध्रुव भी कहा जाता है।

नमगेल ने चेतावनी दी, 'यदि हम इन पहाड़ों में वन्यजीव आबादी पर ध्यान नहीं देंगे और उनका संरक्षण नहीं करेंगे, तो दुनिया की एक तिहाई आबादी के लिए पीने के पानी के साथ-साथ सिंचाई के लिए पानी भी प्रभावित होगा।'

उन्होंने इस तथ्य पर भी प्रकाश डाला कि ट्रांस-हिमालय में जानवरों के रहने के स्थान सैकड़ों या हज़ारों किलोमीटर तक फैले हुए थे, जबकि भारत के मैदानी इलाकों में जानवरों के रहने के स्थान मानव निर्मित सीमाओं के पार थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि उच्च एशिया में संसाधन बहुत बड़े क्षेत्र में बिखरे हुए थे। इसलिए हिम तेंदुए जैसे जानवरों को भोजन की तलाश में बहुत बड़े क्षेत्र में यात्रा करनी पड़ती थी।

पढ़ें अंतर्राष्ट्रीय हिम तेंदुआ दिवसः जलवायु परिवर्तन कैसे करिश्माई बिल्ली को प्रभावित करता है

इसी प्रकार, विश्व प्रसिद्ध कश्मीरी ऊन या पश्मीना ऊन उपलब्ध कराने वाले चांगपा बकरी पालकों को भी अपने पशुओं के चारे के लिए विशाल क्षेत्रों में घूमना पड़ता था।

पश्मीना इतना महत्वपूर्ण था कि जम्मू और कश्मीर के डोगरा शासकों ने, जिन्होंने 1849 में पंजाब के सिख साम्राज्य पर ब्रिटिश कब्जे के बाद संप्रभुता की घोषणा की थी, इसके लिए लद्दाख पर आक्रमण कर दिया था।

नमगेल ने कहा, 'लद्दाख राज्य के लिए आंदोलन सिर्फ हमारे लिए नहीं है, बल्कि पूरे देश की जल सुरक्षा के लिए है... इस नाजुक परिदृश्य की रक्षा करना इस देश के सभी नागरिकों का कर्तव्य है।'

विद्युत कंपनियों के खंबो पर केवल का जाल क्यों

एमडी-सीजीएम से लेकर सीई, एसई, डीई तक हर कदम भ्रष्टाचार

पेज 1 का शेष

और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैविद्युत कंपनी में बैठे गए भारतीय प्रताड़ना सेवा के प्रबंध संचालक और राज्य प्रशासनिक बनाम प्रताड़ना सेवा के मुख्य महाप्रबंधक जिनका एकमात्र देश कानून नैतिकता और जनहितों को त्याग हर तरह सेहर कदम भ्रष्टाचार करते हुएअपनी मोटी कमाई करअपने आंखों को पहुंचानाऔर अपने पास रखना इस प्रकार एक-एक प्रशासनिक अधिकारी जो की प्रबंध संचालक के रूप में बैठाया जाता है एक ही वर्ष में हजार 2000 करोड़ का चंदन खरीदी में, दैनिक वेतन भोगी संविदा एवं आउटसोर्स कर्मियों की सेवाएं लेने और वेतन भत्तों आदि का भुगतान देने, जबसे प्रदेश के विद्युत मंडलों से कंपनी बनने के बाद जो मैकेनिकल विद्युत मीटर हटाकर उसकी जगह इलेक्ट्रॉनिक मीटर और आप इलेक्ट्रॉनिक मीटर हटाकर स्मार्ट मीटर लगाने और कई गुना ज्यादा वसूली करने मेंबनने वाले बिल और उसको माफ करने के बीच में घरेलू उपभोक्ताओं से लेकर व्यावसायिक, औद्योगिक कॉलोनी के नये, पुराने काटने जोड़ने विद्युत संयोजन भ्रष्टाचार करने आदि में कार्यपालन या संभागीय यंत्रि से लेकर प्रबंध संचालक तक लाखों का नुकसानों में करोड़ों रुपए का भ्रष्टाचार करके हजम करना तो बहुत साधारण सी बात हो चुकी है। दूसरी तरफ जो पूरे प्रदेश में और नगरों में जो घरेलू और व्यावसायिक उपभोक्ताओं को विद्युत आपूर्ति के जो खंभे लगे हुए हैं। उन हर महानगरों से लेकर ग्रामीण क्षेत्र में खंबो पर पिछले 30 सालों से केवल टीवी फोन एयरटेल वोडाफोन रिलायंस इंटरनेट कंपनियों द्वारा बिना अधिकृत कार्यालयीन लिखित आज्ञा के बिना शहरी क्षेत्र में लगे लाखों खंबो का भरपूर सदुपयोग का वसूली की जा रही है बदले में प्रबध संचालक मुख्य महाप्रबंधक से लेकर मुख्य अभियंता अधीक्षण यंत्री संभागीय यंत्री तक केवल डालकर खंबो का उपयोग करने वालों से ऊपर के ऊपर वसूली कर रहे हैंऔर यदि ऑफिशियल तरीके से उसमें आज्ञा दी जाती तो उन खंबो के उपयोग के बदले में इन विद्युत वितरण कंपनियों को करोड़ों रुपए प्रति माह राजस्व प्राप्त होता।

दूसरी तरफ सच तो यह भी है की विद्युत वितरण कंपनियों के खंबो का उपयोग मात्र आबादी वाले क्षेत्रों में पथ प्रकाशित करने के लिए ही निगमों पालिकाओ के विद्युत लाइनों पर काम करने के प्रशिक्षित व अधिकृत कर्मचारियों द्वारा ही विद्युत वितरण केंद्रों पर पूर्व सूचना देकर ही केवल खंबो पर चढ़कर लाइटिंग लगाना सुधारने का कार्य किया जा सकता है। इसके विपरीत बिना अधिकृत अनुमति के कोई भी व्यक्ति खंबो को छोड़कर केवल लगाने हटाने व अन्य प्रकार के कार्य करता है जो पूर्ण रूप से अवैधानिक व दंडनीय अपराध की श्रेणी में आता है। खंबो पर उपभोक्ताओं के लिए विद्युत वितरण की लाइनों के विद्युत प्रवाह के अतिरिक्त किसी प्रकार से अन्य कार्यों में उपयोग नहीं किया जा सकता उसमें किसी प्रकार की दुर्घटना होने पर विद्युत कंपनियों की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी इसकी दूसरी तरफ जब विद्युत कंपनियों के कर्मचारी लाइन सुधारने रखरखाव करने इन खंबो पर चढ़ते हैं तो इन खंबो पर इन केबलों के महाजाल से वह उलझकर दुर्घटना के शिकार जाते हैं जिसके लिए इन केवल कंपनियों के अनाधिकृत उपयोग होने के कारण और विद्युत वितरण कंपनियों के प्रबंधन के द्वारा ऊपर के ऊपर मोटी कमाई हजम करने के कारण किसी पर भी कोई भी प्रकरण नहीं लगाया जा सका।

पूरे प्रदेश के साथ-साथ देश में भी इन अनादिकृत उपयोग करने वाली केवल कंपनियों के कारण आने को कर्मचारी शहरी क्षेत्र में विद्युत सुधार कार्य करते समय दुर्घटनाओं के साथ मौत का भी शिकार हो गए। इसके बारे में विद्युत नियामक आयोग के कानून में भी इन केवल कंपनियों के खाबो के उपयोग करने के बारे में कहीं कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं की गई और दूसरी तरफ इलेक्ट्रिक रेगुलेशन एक्ट में इस प्रकार के खाबो के उपयोग के बारे में भी स्पष्ट रूप से प्रतिबंधित करने के बाद में भी इन खंबो का भारी दुरुपयोग इन भारतीय प्रताड़ना सेवा के अधिकारियों द्वारा अपने स्वहित में कर कर्मचारियों के साथकार्य करते समय दुर्घटना से लेकर मृत्यु तक का तांडव करवा रहे हैं।

विद्युत पोल पर टेलीकॉम कंपनियों के केबल बने जानलेवा, लाईनमैनों को सुधार कार्य में हो रही कठिनाई

बिजली कर्मियों के साथ कार्य के दौरान हो रही जानलेवा दुर्घटना से चिंतित मध्यप्रदेश विद्युत मंडल तकनीकी कर्मचारी संघ ने एक संघ के प्रधान कार्यालय रामपुर में एक बैठक का आयोजन किया। बैठक में बिजली कर्मियों के साथ घटित हो रही दुर्घटनाओं पर संघ पदाधिकारियों चिंता व्यक्त की गई।

तकनीकी कर्मचारी संघ के प्रांतीय महासचिव हरेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि संघ पदाधिकारियों ने बैठक में निर्णय लिया है कि इस संबंध में मध्य प्रदेश शासन के ऊर्जा विभाग के विशेष कर्तव्य अधिकारी को पत्र लिखकर अवगत कराया जावे और इसके लिए संघ द्वारा विशेष कर्तव्य अधिकारी को एक पत्र लिखा गया है। पत्र में विशेष कर्तव्य अधिकारी का ध्यानाकर्षण करते हुए हरेंद्र श्रीवास्तव ने कहा कि प्रदेश की तीनों वितरण कंपनियों के विद्युत पोलों से बिजली उपभोक्ताओं की बिजली की आपूर्ति की जाति है, इन पोलों के माध्यम से उपभोक्ताओं तक निर्बाध और सुरक्षित बिजली की आपूर्ति करना कंपनी के प्रबंधन, अधिकारियों और लाइनमेनों का उत्तरदायित्व है, लेकिन थोड़े से राजस्व की प्राप्ति के लिए पोल पर चढ़कर फाल्ट सुधारने वाले लाइनमेनों की जान जोखिम में डालना अनुचित है।

हरेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि विद्युत पोल पर उपभोक्ताओं की विद्युत केबल से साथ टेलीकॉम कंपनियों की केबल भी खींच दी गई है, जिससे पोल पर मकड़ी के जाले की तरह केबल का जाल सा बन गया है, जिससे उपभोक्ता की शिकायत के निराकरण के लिए पोल पर चढ़कर सुधार करने वाले लाइनमेनों को काफी कठिनाई होती है और इस दौरान केबल के जाल में पैर फंसने के कारण जानलेवा हादसे भी घटित हो रहे हैं। संघ ने अपने पत्र में विशेष कर्तव्य अधिकारी को लिखा है कि करंट का कार्य बहुत ही संवेदनशील और जोखिमपूर्ण होता है, इसलिए संघ ने तीनों विद्युत वितरण कंपनियों के प्रबंधन से मांग की है कि विद्युत केबल का अलावा टेलीकॉम या अन्य किसी भी तरह के केबल विद्युत पोल पर न लगाए जाएं। इसके साथ ही संघ के अजय कश्यप, मोहन दुबे, राजकुमार सैनी, लखन सिंह राजपूत, इंद्रपाल सिंह, राहुल दुबे, पवन यादव, संदीप यादव, दशरथ शर्मा, अमीन अंसारी, पीएन मिश्रा, विनोद दास आदि ने मांग की है कि केबल के जानलेवा जाल के बीच कार्य करने वाले आउटसोर्स, संविदा एवं नियमित कर्मचारियों कैशलेस बीमा और 20 लाख का जोखिम बीमा किया जाए।

समय, कार्य विस्तार, महंगाई, सलाहकारों के नाम लूट का तांडव

पेज 1 का शेष

अधिकांश भवन पाठ के साथ भावनाओं के अधिकांश संभागों मंडलों मैं प्रभारी उप, सहायक, कार्यपालन व अधीक्षण यंत्री जिनका मूल उद्देश्य सरकारी धन से कागजी खाना पूर्ति कर ठेकेदारों के साथ मिलकर मोटा धंधा करना है जिसके बारे में पूर्व में भी छाप चुका हूं। किस प्रकार से सभी बड़े शहरों में जहां वे वीआइपी का आना-जाना है। किस प्रकार से 10 12 साल 15 साल चलने वाली एक ही वेरी केडिंग के बिल लोक निर्माण विभाग के उप व सहायक यंत्री रंग रोगन करवा कर उसी का उपयोग करना लाखों रुपए के बिल बनाकर इंदौर में संभाग क्रमांक 1 के प्रभारी सहायक यंत्री सविता उप यंत्री राजेंद्र शर्मा हजम कर रहे हैं यह कार्य कार्य भवनों के रखरखाव पुताई से लेकर सड़कों की मरम्मत निर्माण कार्यों में भी जो निवेदन निकल जाती है वह 30 से 50-60% तक कम पर डलवा कर अधिकांश कागजों पर होता है। या बाद में उसमें समय और कार्य विस्तार देकर मोटी अनुपूरक मांग भेज कर स्वीकृति ले दे 30 से 60% कमीशन पर अधीक्षण यंत्री लूट का तांडव मचाता है।

पूर्व का व्यापम कांड का वसूलीबाज महानायक वर्तमान का प्रभारी अधीक्षण यंत्री इंदौर मंडल और मुख्य अभियंता प्रभारी भवन में बैठा रावत इस लूट में माहिती भूमिका अदा कर रहा है और यहां पर भी पूरे प्रदेश में भावनाओं सड़कों फूलों आदि की ड्राइंग डिजाइन को कंसलटेंट से बनवाने के नाम पर मौटा धन की लूप पटनाची है जिसमें प्रभारी प्रमुख अभियंता मेहरा प्रधान सचिव के सी गुप्ता मंत्री राकेश सिंह सब अपना अपना डकारकर सभी जालसाजी इंजीनियरों को खुली लूट की छूट दे रहे हैं।

एन डी बी और सेतु कार्यपालन यंत्रियों, का कमाल ठेकेदार का धमाल

ओम्कारेश्वर,19 करोड़ की स्वीकृति 46 करोड़ पर पहुँच गया, NDB ओबेदुल्लागंज से नागपुर मार्ग बुदनी-होशंगाबाद ए प्रोच पुल 59 करोड़ से 117 करोड़ तक पहुँच गया,पन्ना से मझगवां पुल गिलहरी से छतरपुर के बीच केन नदी का 28.99.62 से 59 करोड़ तक पहुच गया है ठेकेदार नाम से राजेश लेकिन रानीतिक पकड़ इतनी ताकतवर हैं कि चीफ़ इंजीनियर, कार्यपालन यंत्री एअ्ध को एक फोन में हटवा देता हैं ऐसा सेतु के कर्मचारी ओर अधिकारी बताते है।

फ्लड डैमेज का रिकॉर्ड

प्रमुख अभियंता में सहायक यंत्री को प्रभारी कार्यपालन यंत्री फ्लड डैमेज काम देख रहे हैं, साथ साथ NDB में पुल एंव रोड़ प्रोजेक्ट के काम देखते हैं लेकिन मध्यप्रदेश के फ्लड डेमेज का डाटा अभी तक सार्वजनिक नहीं किया है जिसके कारण प्रदेश की सड़कों एंव भवन तथा पुल पुलियाओं की नुकसान एंव आर्थिक भार का पता नहीं चल रहा है।

सरकार के वित्त विभाग ने श्री टी एन सिंह को प्रमुख अभियंता कार्यालय में पदस्थापना कर रखी है आवंटन ओर ख़र्च,पर बड़ी पैनी नज़र रखते है संभाग के कार्यपालन यंत्री हिसाब भी लेते हैं लेकिन आवंटन ओर ख़र्च का ब्यौरा सूचना पटल पर नियम अनुसार चस्पा होना चाहिये पर ऐसा नहीं करते हैं।

मध्यप्रदेश लोक निर्माण विभाग के आर के मेहरा प्रमुख अभियंता ने सड़कों की शिकायत के लिये 'लोकपथ एप' बनाया गया है यदि सड़क पर आप गड्ढे पाते हैं तो तुरंत ही स्थल से गढ्ढों की फ़ोटो/ वीडियो खिंचकर एप पर लोड कीजिये शिकायत का समाधन 7 दिवस में सुनिश्चित होना है,

15 सितंबर को अभियंता दिवस के उपलक्ष्य में तकनीकी विशेषज्ञ MV की मूर्ति का उद्घाटन

इसी तरह लोक निर्माण विभाग के निर्माण भवन परिसर MV की प्रतिमा का अनावरण ण्श/मंत्री महोदय के द्वारा 'इंजीनियर डे' 15 सितंबर को प्रथम इंजीनियर के रूप लगभग तैयारी जौरो पर है, भारत में वर्ष 1968 से हर साल 15 सितंबर को राष्ट्र के विकास में इंजीनियरों के योगदान को चिन्हित करने के लिए इंजीनियर दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन भारत के सबसे महान इंजीनियरिंग सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जयंती का दिन है, जो सर MV के नाम से भी जाने जाते है अनावरण कार्यक्रम की तैयारियों के लिये मुख्य अभियंता संजय मस्के एवं अंनत रघुवंशी अविनेंद्र सिंह सहित स्टाफ़ दिन रात जुटा हुआ है।

साप्ताहिक समय माया

देर रात तक जागने की आदत भी बन सकती है आपके मोटापे का कारण

सेहतमंद रहने के लिए सिर्फ अच्छी डाइट और रेगुलर एक्सरसाइज ही नहीं, बल्कि अच्छी और पर्याप्त नींद भी बेहद जरूरी होती है। नींद पूरी होने से सिर्फ शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी दुरुस्त होता है। जिस तरह हमारे खानपान का हमारी सेहत पर गहरा असर पड़ता है, ठीक उसी तरह नींद भी हमारे स्वास्थ्य को सीधे प्रभावित करती है। नींद आपकी सेहत को सुधार भी सकती है और बिगाड़ भी सकती है। इसलिए जरूरी है कि रोजाना अपनी नींद पूरी की जाए।

सेहत पर नींद के प्रभाव को लेकर इस साल अब तक कई सारी स्टडीज की जा चुकी है। इन स्टडीज में यह पता चला कि कैसे नींद अलग-अलग तरीकों से आपकी सेहत पर प्रभाव डालती है। साथ ही कुछ ऐसी कंडीशन की सामने आई, जो हमारी नींद को प्रभावित कर सकती है। ऐसे में जानते हैं नींद से जुड़ी इन 5 स्टडीज के बारे में-

मोटापे का खतरा

हार्वर्ड हेल्थ के एक अध्ययन के मुताबिक जो लोग देर तक

जागते हैं और अपनी पनी बायोलॉजिकल क्लॉक को नजरअंदाज करते हैं, उनके मेटाबॉलिज्म पर बुरा प्रभाव पड़ता है। खासकर पुरुषों से इसकी वजह से मोटापा बढ़ सकती है, जिससे उनके पेट पर चर्बी जमा हो सकती है। साथ ही मोटापे की वजह से हाई ट्राइग्लिसराइड का खतरा भी बढ़ जाता है।

सोचने की क्षमता पर असर

हेल्थएक्सपर्ट के मुताबिक नींद पूरी न होने वजह से स्लीप कम हो सकती है। यह एक ऐसी कंडीशन है, जिसमें आप सपना देखते हैं। इसमें मस्तिष्क दिन भर की छोटी-छोटी यादों को लॉन्ग टर्म मेमोरीज के बैंक में जमा करता है। इसका सोचने-समझने और अन्य ब्रेन फंक्शन से सीधा संबंध पड़ता है। ऐसे में नींद की कमी होने पर सोचने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

गट हेल्थ के लिए जरूरी नींद

आपकी नींद की असर आपकी गट हेल्थ पर भी पड़ता है। आंतों में पाए जाने वाले हेल्दी बैक्टीरिया आंतों, मस्तिष्क और शरीर के सेंट्रल नर्वस सिस्टम के बीच कम्युनिकेशन कर नींद को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। इस कम्युनिकेशन को गट-ब्रेन-एक्सिस कहा जाता है।

अकेलापन और नींद

नींद की कमी कई तरह से सेहत को प्रभावित करती है, लेकिन कुछ ऐसे फैक्टर्स भी है, जिससे आपकी नींद भी प्रभावित हो सकती है। अकेलापन इन्हीं फैक्टर्स में से एक है, जो ज्यादातर चुवाओं में देखने को मिलता है।

शेड्यूल में बदलाव का नींद पर प्रभाव

सोशल जेटलैग भी आपकी नींद को प्रभावित कर सकती है। इस कंडीशन में आपके रोजमर्रा का शेड्यूल बदलता, लेकिन शरीर की स्थिति में कोई बदलाव नहीं होता, जिससे नींद प्रभावित होती है।

सेहत का खजाना है गत्यात्मक वक्रासन

आज के समय में लोग इतना बिजी रहने लगे हैं कि उनके पास टाइम ही नहीं होता। अपनी हेल्थ पर ध्यान दिया जाए और कुछ ऐसी एक्सरसाइज पर ध्यान दिया जाए। रोजाना योग और मेडिटेशन करने के अनेक फायदे हैं। कोशिश करें गत्यात्मक वक्रासनको अपनी एक्सरसाइज रूटीन में शामिल करें।

गत्यात्मक मेरु वक्रासन जैसे कई ऐसे योगासन हैं, जिनका रोजाना कुछ मिनटों का अभ्यास ही आपको हेल्दी रखने में सहायक हो सकता है। गत्यात्मक मेरु

वक्रासन, जिसे डायनामिक स्पाइनल ट्विस्ट भी कहा जाता है, एक ऐसा योगासन है जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद कर सकता है।

यह आसन तंत्रिका तंत्र को स्टिमुलेट करता है और शारीरिक लचीलेपन को बढ़ावा देता है। इस लेख में योग शिक्षक रजनीश शर्मा गत्यात्मक मेरु वक्रासन यानी डायनामिक स्पाइनल ट्विस्ट के फायदे बता रहे हैं।

गत्यात्मक मेरु वक्रासन

गत्यात्मक मेरु वक्रासन को योग के उन आसनों में गिना जाता है, जो रीढ़ की हड्डी को स्वस्थ और मजबूत बनाते हैं। यह आसन धीरे-धीरे शरीर को मोड़ने और उसकी गति को नियंत्रित करने की प्रक्रिया पर केंद्रित है।

मेरु वक्रासन का डायनामिक वर्जन होने के कारण इसे शरीर को धीरे-धीरे घुमाते हुए किया जाता है, जिससे आसन की प्रभावशीलता और बढ़ जाती है। इस आसन का अभ्यास न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन को भी सुधारता है।

ऐसे करें गत्यात्मक मेरु वक्रासन

सबसे पहले योग मैट पर बैठ जाएं, दोनों पैरों को आगे की ओर फैलाएं।

पीठ सीधी रखें और हाथों को जांघों के पास रखें।

अपने पूरे शरीर को रिलैक्स करें और धीमी गति से गहरी सांस लें।

अब अपने दाहिने पैर को घुटने से मोड़ें।

बाईं जांघ के ऊपर रखें। बायां पैर सीधा रहेगा।

अपनी दाहिनी हथेली को पीछे की ओर जमीन पर रखें।

बाएं हाथ को सीधे दाहिने घुटने के पास रखें।

अब धीरे-धीरे सांस भरते हुए अपनी रीढ़ को सीधा रखते हुए शरीर को दाहिनी ओर घुमाएं।

घुमाते समय अपनी गर्दन को भी घुमाएं और पीछे की ओर देखें।

थोड़ी देर इस स्थिति में रखें और गहरी सांस लें।

अब धीरे-धीरे सांस छोड़ते हुए वापस शुरुआती स्थिति में आएं।

अब इसी प्रक्रिया को दूसरी दिशा में दोहराएं।

बाएं पैर को मोड़ें और शरीर को बाईं ओर घुमाएं।

इस आसन को दोनों दिशाओं में 5-10 बार करें।

गत्यात्मक मेरु वक्रासन के लाभ

रीढ़ की हड्डी का लचीलापन बढ़ाएं

गत्यात्मक मेरु वक्रासन का मुख्य उद्देश्य रीढ़ की हड्डी को लचीला और स्वस्थ बनाना है। यह आसान रीढ़ की हड्डी के सभी हिस्सों को गतिशीलता प्रदान करता है, जिससे शरीर में लचीलापन बढ़ता है।

कमर और पीठ के दर्द से राहत

जिन लोगों को पीठ या कमर दर्द की समस्या होती है, उनके लिए यह आसन बेहद लाभकारी है। शरीर को मोड़ने और उसकी गति को नियंत्रित करने से पीठ की मांसपेशियों में आराम मिलता है। यह आसन कमर के निचले हिस्से की जकड़न को दूर करने और स्पाइन को मजबूत करने में सहायक है।

डाइजेस्टिव सिस्टम को सुधारें

इस आसन का एक और बड़ा लाभ यह है कि यह डाइजेस्टिव सिस्टम के लिए फायदेमंद है। जब आप अपने पेट और पेट के आसपास के हिस्से को घुमाते हैं, तो इससे आंतों और पेट पर दबाव पड़ता है, जिससे पाचन प्रक्रिया में सुधार होता है। गत्यात्मक मेरु वक्रासन पेट की गैस, कब्ज और अपच जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायक है।

ये संकेत जो बताते हैं कि बूढ़े हो रहे हैं आपके फेफड़े, न करें अनदेखा

उम्र बढ़ने के साथ-साथ हमारे शरीर के अंग धीरे-धीरे कमजोर होने लगते हैं। सेहत का ध्यान न रखने के कारण भी बॉडी ऑर्गेन्स ठीक तरीके से फंक्शन नहीं कर पाते। इसी कारण वक्त के साथ हमारे फेफड़े कमजोर होने लगते हैं। ऊपर से बढ़ता प्रदूषण इनके लिए और भी ज्यादा हानिकारक साबित हो रहा है। वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट 2022 के मुताबिक, भारत में वायु प्रदूषक PM 2.5 का स्तर वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन के बताए स्तर से दस गुणा ज्यादा है।

इसलिए दूषित हवा में सांस लेने से फेफड़ों को काफी नुकसान पहुंचता है। इसलिए उन संकेतों की पहचान करना जरूरी है, जो बताते हैं कि अब आपके फेफड़े सामान्य से कम काम कर रहे हैं। रेस्पिरेटरी हेल्थ का ध्यान रखने के लिए इन लक्षणों की पहचान करना जरूरी है। आज हम जानेंगे उन्हीं लक्षणों के बारे में।

कमजोर फेफड़ों के संकेत

सांस लेने में कठिनाई- यदि आपको सांस लेने में कठिनाई होती है, तो यह संकेत हो सकता है कि आपके फेफड़े कम क्षमता से काम कर रहे हैं। यह खासकर तब होता है जब आप सीढ़ियां चढ़ते हैं या एक्सरसाइज करते हैं। ऐसा उम्र के साथ फेफड़ों की इलास्टिसिटी कम होने की वजह से या फेफड़ों को प्रदूषण आदि के कारण होने वाले नुकसानों की वजह से भी हो सकता है।

खांसी-

बार-बार खांसी, खासकर बिना किसी कारण के, फेफड़ों की समस्या का संकेत हो सकता है। यह फेफड़ों में जलन या सूजन का संकेत हो सकता है। साथ ही, खांसी में बलगम निकलना भी फेफड़ों की समस्या की ओर संकेत करते हैं। खासकर अगर यह समस्या दो हफ्ते से ज्यादा रह गई है।

सांस लेने में घरघराहट- यदि आपको सांस लेते समय घरघराहट होती है, तो यह फेफड़ों में सूजन या कॉन्स्ट्रिक्शन का संकेत हो सकता है। यह अक्सर ब्रोंकाइटिस या अस्थमा के मामले में होता है। इसलिए अगर ऐसी कोई समस्या हो, तो डॉक्टर से तुरंत संपर्क करें।

सीने में दर्द- सीने में दर्द, खासकर सांस लेने के दौरान, फेफड़ों की समस्या का संकेत हो सकता है। यह फेफड़ों में सूजन या इन्फेक्शन का संकेत देता है।

थकान- यदि आप सामान्य गतिविधियों के बाद भी थका हुआ महसूस करते हैं, तो यह फेफड़ों की समस्या का संकेत हो सकता है। फेफड़े जब ठीक से काम नहीं करते हैं, तो वे शरीर को सही मात्रा में ऑक्सीजन नहीं पहुंचा पाते हैं, जिससे थकान होती है।

शरद पूर्णिमा की चांदनी में रखें खीर में घुलता है 'अमृत'

खाने से होंगे 5 बड़े फायदें

सनातन धर्म में शरद पूर्णिमा का अत्यधिक महत्व है। यह पर्व हर साल अश्विन माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। हिंदू कैलेंडर के अनुसार, साल भर में 12 पूर्णिमा होती हैं, लेकिन शरद पूर्णिमा को विशेष स्थान प्राप्त है। इसे रास पूर्णिमा और कोजगरा पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है।

मान्यता है कि इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ महारास किया था, इसलिए इसे रास पूर्णिमा कहा जाता है। दूसरी ओर, इस रात माता लक्ष्मी का पृथ्वी पर आगमन होता है, जिससे इसे कोजगरा पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस रात, लोग खुले आसमान के नीचे खीर रखते हैं, जो कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करती है।

शरद पूर्णिमा 2024 की तिथि

वैदिक पंचांग के अनुसार, इस वर्ष शरद पूर्णिमा की तिथि 16 अक्टूबर, बुधवार को रात 8:40 बजे से प्रारंभ होगी और यह 17 अक्टूबर, शाम 4:55 बजे तक मान्य रहेगी। इस दिन चंद्रमा का उदय शाम 5:05 बजे होगा। विशेष रूप से, खीर को 16 अक्टूबर की रात 8:40 बजे से चंद्रमा की किरणों में रखा जा सकता है, जो 16 कलाओं से युक्त होगा।

शरद पूर्णिमा की खीर के लाभ

1. माता लक्ष्मी का आशीर्वादः शरद पूर्णिमा की खीर बनाकर माता लक्ष्मी को भोग लगाने से उनके आशीर्वाद की प्राप्ति होती है।

2. कुंडली में चंद्रमा की मजबूतीः इस दिन खीर का सेवन करने से कुंडली में चंद्रमा मजबूत होता है। दूध, चीनी और चावल चंद्रमा से जुड़े तत्व हैं, जिससे चंद्र दोष कम करने में मदद मिलती है।

3. स्वास्थ्य में सुधारः मान्यता है कि चंद्रमा की किरणों में औषधीय गुण होते हैं। जब ये खीर पर पड़ती हैं, तो वह अमृत तुल्य हो जाती है, जिससे स्वास्थ्य में सुधार होता है।

4. रोगों से राहतः शरद पूर्णिमा की खीर का सेवन मानसिक और शारीरिक ठंडक प्रदान करता है, जो कई बीमारियों में लाभकारी होता है।

5. इम्यूनिटी में सुधारः चांदी के बर्तन में खीर को चांदनी में रखने से रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि हो सकती है।

इस प्रकार, शरद पूर्णिमा का पर्व केवल धार्मिक महत्व ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण है।

करवा चौथ पर लगेगा भद्रा, जानें पूजा का शुभ मुहूर्त और आरती

करवा चौथ हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण त्योहार है, जो पति-पत्नी के रिश्ते में विश्वास बढ़ाता है। इस दिन महिलाएं सुखी वैवाहिक जीवन और पति की लंबी उम्र के लिए निर्जला व्रत रखती हैं। इस वर्ष, करवा चौथ का त्योहार 2024 में 20 अक्तूबर 2024 को मनाया जाएगा। हालांकि, इस बार करवा चौथ पर भद्रा का प्रभाव रहेगा, जो कि पूजा के समय को प्रभावित कर सकता है। तो आइए इसके बारे में जानते हैं।

भद्रा का प्रभाव

भद्रा, एक ज्योतिषीय स्थिति है, जिसमें ग्रहों की स्थिति शुभ नहीं मानी जाती। इस बार भद्रा का समय करवा चौथ की पूजा के समय से मेल खा रहा है। ज्योतिषियों के अनुसार, भद्रा का प्रभाव 1 नवंबर को सुबह 5:39 बजे से लेकर 7:12 बजे तक रहेगा। इस दौरान पूजा करना वर्जित माना जाता है। ऐसे में महिलाओं को अपने पूजा के समय को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम बनाना होगा।

शुभ मुहूर्त

करवा चौथ की पूजा का शुभ मुहूर्त 20 अक्तूबर को रात 8:00 बजे से लेकर 9:00 बजे तक रहेगा। इस समय, चंद्रमा निकलने के बाद पूजा करना सर्वोत्तम रहेगा। इसलिए, महिलाएं इस समय का ध्यान रखें और चंद्रमा की आरती का विशेष महत्व दें।

पूजा की सामग्री

करवा चौथ की पूजा के लिए आवश्यक सामग्री में करवा, मिठाई, फल, सिंदूर, रोटी, और दीपक शामिल हैं। महिलाएं इन सभी चीजों को इकट्ठा कर, संध्या के समय चंद्रमा को अर्घ्य देकर अपने पति की लंबी उम्र की कामना करेंगी।

आरती का महत्व

आरती इस पूजा का एक अहम हिस्सा है। महिलाओं को अपने पति की लंबी उम्र के लिए आरती गाते समय पूरे मन से प्रार्थना करनी चाहिए। यह न केवल पति-पत्नी के रिश्ते को मजबूत बनाता है, बल्कि एक दूसरे के प्रति प्यार और समर्पण का भी प्रतीक है।

स्त्रियां करवाचौथ का व्रत पति की दीर्घायु के लिए रखती हैं। यह व्रत अलग-अलग क्षेत्रों में वहां की प्रचलित मान्यताओं के अनुसार मनाया जाता है, लेकिन इन मान्यताओं में थोड़ा-बहुत अंतर होता है पर हर मान्यता का आधार पति की दीर्घायु ही होती है। अक्सर दांपत्य जीवन में बहुत सी ऐसी छोटी-छोटी बातें होती हैं जो मन को बेहद सुकून देती हैं और इसी आपसी प्रेम को दीर्घायु बनाने के लिए भारतीय विवाहित युवतियां करवा चौथ का व्रत रखती हैं।

कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को (करवा-चौथ) व्रत करने का विधान है। इस व्रत की विशेषता यह है कि केवल सौभाग्यवती स्त्रियों को ही यह व्रत करने का अधिकार है। जो सौभाग्यवती (सुहागिन) स्त्रियां अपने पति की आयु, स्वास्थ्य व सौभाग्य की कामना करती हैं वे यह व्रत

रखती हैं। यह व्रत 12 वर्ष तक अथवा 16 वर्ष तक लगातार हर वर्ष किया जाता है। अवधि पूरी होने के पश्चात इस व्रत का उद्यापन (उपसंहार) किया जाता है। जो सुहागिन स्त्रियां आजीवन रखना चाहें वे जीवनभर इस व्रत को कर सकती हैं। इस व्रत के समान सौभाग्यदायक व्रत अन्य कोई दूसरा नहीं है। अतः सुहागिन स्त्रियां अपने सुहाग के रक्षार्थ इस व्रत का सतत पालन करें।

व्रत की विधि कार्तिक कृष्ण पक्ष की चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी अर्थात उस चतुर्थी की रात्रि को जिसमें चंद्रमा दिखाई देने वाला है, उस दिन प्रातः स्नान करके अपने सुहाग (पति) की आयु, आरोग्य, सौभाग्य का संकल्प लेकर दिनभर निराहार रहें।

करवा चौथ नया रूप

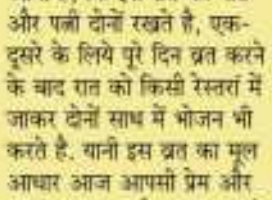

करवा चौथ के व्रत का महत्व समय के साथ और भी बढ़ गया है। समय के साथ आधुनिक और शिक्षित महिलाओं के वर्ग में जहां एक ओर अन्य व्रतों का प्रचलन कम हुआ है, वहीं करवा चौथ आज अपने प्रेमी, होने वाले पति और जीवन साथी के प्रति स्नेह व्यक्त करने का प्रर्याय बन गया है। आज यह केवल सुहागिनों का व्रत ही न रहकर, पतियों के द्वारा अपनी पत्नियों के लिये रखा जाने वाला पहला व्रत बन गया है। देखने में आया है, कि इस व्रत को पति और पत्नी दोनों रखते है, एक-दूसरे के लिये पूरे दिन व्रत करने के बाद रात को किसी रेस्तरां में जाकर दोनों साथ में भोजन भी करते है. यानी इस व्रत का मूल आधार आज आपसी प्रेम और समर्पण रह गया है। कथा, सुनने, निर्जल रहने, चांद को अर्घ्य देने और पति द्वारा पानी पिलाए जाने जैसी रस्में भी निभाने कि पूरी कोशिश कर ली जाती है। पर नौकरी पेशा होने पर सभी रीतियां विधि विधान के अनुसार तो नहीं होती है।

साप्ताहिक समय माया

यूक्रेन-रूस, इसराइल-हमास युद्ध रोकने सभी करें प्रयास

पेज 1 का शेष

उसकी नीतियों को ना माने या उसका विरोध करने पर उसे पर अनेकों प्रकार के वित्तीय व्यवसायिक प्रतिबंध लगाकर परेशान करने अर्थव्यवस्था को तोड़ने बर्बाद करने का संयंत्र कर अपनी शर्तें मानने के लिए मजबूर करते हैं जो कीपूरी तरह से उस की दादागिरी और बदतमीजी को प्रदर्शित करता है।

यथार्थ में अमेरिका यूक्रेन के टुच्चे राष्ट्रपति जेलंस्कि को अमेरिकी गुंडो के नाटो समूह में शामिल कर उसके चिर शत्रु हथियार उत्पादन में उसके प्रतियोगी पड़ोसी रूस को नीचा दिखाना चाहता है। इसलिए उसकोनाटो समूह में शामिल करने का आश्वासन दे रूस को गिरने की चाल में बर्बादी यथार्थ में यूक्रेन की भी हो रही है। जिसका परिणाम अनावश्यक रूप से पूरी पृथ्वी पर उसके आंगन में बसे पशु पक्षी जैन जंगल जमीन जल वायुमंडल को भी युद्ध की लपटें बर्बाद कर रही है। इसके लिए आवश्यक है की पूरी

तरह से पूरी दुनिया के सभी रसों को शांति के लिए अमेरिका का ही बहिष्कार करना चाहिए। और न मानने पररूस चीन उत्तरी कोरिया ईरान व अन्य सभी पीड़ित नाटो राष्ट्रों के साथ अन्य राष्ट्रों को भी मिलकर सबसे पहले अमेरिका को ही समाप्त करना चाहिए। क्योंकि उसकी जालसाज कंपनियों माइक्रोसॉफ्ट गूगल मेटा वॉलमार्ट अमेजॉन हथियार औषधि उत्पादक आदि कंपनियों ने पूरे विश्व को लूटने बर्बाद करने और गुलाम बनाने के लिए बुरी तरह से अपने मकड़ जाल में उलझा रखा है। अमेरिका व उसकी जालसाज कंपनियों की खत्म होना अति आवश्यक है। ताकि न केवल विश्व के प्राकृतिक एवं मानव निर्मित स्रोतों को बचाने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियां अगले 100 साल तक पृथ्वी के आंगन में बसे राष्ट्रों की, शांति से जीवन यापन कर सकेंगे अन्यथा यह अमेरिका और उसकी कंपनियां पृथ्वी पर बसे मानवों के साथ अन्य सभी जीव जंतुओं पर्यावरण प्रकृति स्त्रोतों को धन कमाने के षड्यंत्र में तन से और मन से कमजोर पंगु बना गुलाम बना पशु बनाकर हांकने की तैयारी में है।

ईरानियों ने बगदाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अपने काफिले पर अमेरिकी हमले में ईरानी रिवोल्यूशनरी गाड्र्स मेजर जनरल कासिम सुलेमानी की हत्या के बाद 3 जनवरी, 2020 को तेहरान में अमेरिकी 'अपराधों' के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान एक अमेरिकी झंडा जलाया। अट्टा केनारे / एएफपी वाया गेटी इमेजेज क्या आप जानते हैं कि ट्रुथआउट एक गैर-लाभकारी संस्था है और आप जैसे पाठकों द्वारा स्वतंत्र रूप से वित्त पोषित है? यदि आप हमारे काम को महत्व देते हैं, तो कृपया दान देकर हमारे काम का समर्थन करें।

ऐसा कैसे हुआ कि दुनिया भर के लोग इस बात पर सहमत हो गए हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका अब विश्व शांति और लोकतंत्र के लिए प्राथमिक खतरों में से एक है? द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के पतन के बाद दो जापानी शहरों को परमाणु बम से नष्ट करने और खुद को दुनिया की शीर्ष महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के बाद, अमेरिका जल्दी ही अपनी नई सैन्य श्रेष्ठता से नशे में चूर हो गया। अमेरिका ने जल्द ही एक सिद्धांत पेश किया जिसने खुद को दुनिया की पुलिस के रूप में स्थापित किया, कोरियाई और वियतनामी युद्धों में पूरे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गिराए गए बमों से अधिक बम गिराए, और पूरे लैटिन अमेरिका में लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकारों के खिलाफ सैन्य तख्तापलट की योजना बनाई। इसने बदले में क्रूर तानाशाही का समर्थन किया और दुनिया भर में इतिहास में किसी भी अन्य राष्ट्र या साम्राज्य की तुलना में अधिक विदेशी सैन्य ठिकानों की स्थापना की। यह सब द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद पहले 30 या इतने वर्षों के भीतर हुआ। 21वीं सदी के आते-आते, अमेरिका दुनिया की एकमात्र सैन्य और आर्थिक महाशक्ति बन गया था। फिर भी, इससे अमेरिकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं पर विराम नहीं लगा। 11 सितंबर, 2001 के आतंकवादी हमलों के बाद 'आतंकवाद के खिलाफ़ वैश्विक युद्ध' शुरू किया गया था, जिसके अंत में 2013 तक दुनिया भर के लोगों ने अमेरिका को 'विश्व शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा' माना।

अमेरिकी साम्राज्यवाद की जड़ें क्या हैं? साम्राज्यवादी विस्तार और युद्धों का घरेलू लोकतंत्र पर क्या प्रभाव पड़ा है? क्या अमेरिकी साम्राज्य पीछे हट रहा है? इस साक्षात्कार में, विद्वान और कार्यकर्ता खुरी पीटरसन-स्मिथ, जो इंस्टीट्यूट फॉर पॉलिसी स्टडीज़ में माइकल रैटनर मिडिल ईस्ट फ़ेलो हैं, चर्चा करते हैं कि कैसे अमेरिकी साम्राज्यवाद ने घरेलू और विदेशी दोनों जगहों पर लोकतंत्र को कमज़ोर किया है, यहाँ तक कि विदेशी युद्धों को घरेलू पुलिस की बर्बरता से भी जोड़ा गया है।

सी.जे. पॉलीक्रोनियोः अमेरिका में आतंकवाद के खिलाफ़ युद्ध अभियानों का एक लंबा इतिहास है, जो 19वीं सदी के अंत में अराजकतावाद के प्रसार तक जाता है। शीत युद्ध के दौर में, कम्युनिस्टों को नियमित रूप से 'आतंकवादी' करार दिया जाता था, और आतंकवाद के खिलाफ पहला व्यवस्थित युद्ध रीगन प्रशासन के दौरान शुरू हुआ था। 11 सितंबर के हमलों के बाद, बुश प्रशासन ने दूरगामी नीतिगत पहलों की एक श्रृंखला को लागू करके आतंकवाद के खिलाफ युद्ध को फिर से शुरू किया, जिनमें से कई, संयोग से, जनता द्वारा अनदेखी की गईं, लेकिन ओबामा और ट्रम्प प्रशासन के दौरान भी जारी रहीं, यह 1670 के दशक की बात है।

मैं तर्क दूंगा कि अमेरिका कभी भी लोकतंत्र नहीं रहा है, और इसका एक मुख्य कारण इसकी मूल रूप से स्थायी युद्ध की स्थिति है, जो इसकी स्थापना के साथ ही शुरू हो गई थी।

20वीं सदी की शुरुआत में फिलीपींस में एक अलग अमेरिकी प्रतिवाद में, अमेरिकी सैनिकों ने 'वॉटर क्योर' का इस्तेमाल किया, जो कि 'वॉटरबोर्डिंग' के समान एक यातना रणनीति थी जिसका इस्तेमाल अमेरिका ने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में किया है। यह झुलसी हुई धरती के उस भयानक युद्ध की एक विशेषता थी जिसे अमेरिका ने स्पेनिश उपनिवेशीकरण के बाद एक स्वतंत्र देश के लिए फिलिपिनो क्रांतिकारियों द्वारा लड़े गए युद्ध के दौरान छेड़ा था। अमेरिका ने दसियों हज़ार फिलिपिनो लड़ाकों और सैकड़ों हज़ारों - लगभग दस लाख - नागरिकों को मार डाला। भुखमरी और हैजा के प्रकोप जैसी माध्यमिक हिंसा के कारण भी बहुत ज़्यादा मौतें हुईं, और अमेरिकी घोषणा के कारण कि नागरिकों को निशाना बनाना उचित था (जैसा कि कुख्यात बलांगिगा नरसंहार में देखा गया)। यह 1901 में समर द्वीप पर उस घटना के दौरान था, जब एक अमेरिकी जनरल ने सैनिकों को 10 वर्ष से अधिक उम्र के सभी लोगों को मारने का आदेश दिया था। पूरी आबादी को 'दुश्मन' के रूप में नामित करना - और इसलिए हिंसा के लिए लक्ष्य - सोमालिया, यमन, इराक और अन्य स्थानों पर गूंजता है जहां अमेरिका ने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध लड़ा है। कहने का तात्पर्य यह है कि अमेरिकी साम्राज्य के इतिहास में अलग-अलग अध्याय हैं, लेकिन अमेरिकी शक्ति और 'अमेरिकी जीवन शैली' की रक्षा में सैन्य हिंसा और मानवाधिकारों के हनन जिसने लोकतंत्र और कानून के शासन को तहस-नहस कर दिया। क्या आप यू.एस. लोकतंत्र को खत्म करने में आतंकवाद के खिलाफ युद्ध की नीतियों के प्रभाव के बारे में विस्तार से बता सकते हैं? खुरी पीटरसन-स्मिथः यह सच हैः आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में यू.एस. ने जिन रणनीतियों और विश्वासों को अपनाया है, उनकी जड़ें हमारे वर्तमान समय से बहुत पहले से हैं। मैं तर्क दूंगा कि यू.एस. कभी भी लोकतंत्र नहीं रहा है, और इसका एक मुख्य कारण इसकी मूल रूप से स्थायी युद्ध की स्थिति है, जो इसकी स्थापना के साथ ही शुरू हो गई थी। उदाहरण के लिए, न्यू इंग्लैंड के बसने वालों ने यहां के स्वदेशी लोगों के खिलाफ विद्रोह का मुकाबला किया, जिन्होंने किंग फिलिप के युद्ध में उपनिवेशीकरण का विरोध किया था। बसने वालों ने वयस्कों और बच्चों के समुदायों को 'दुश्मन' मानते हुए स्वदेशी राष्ट्रों को घेर लिया और उन्हें अविश्वसनीय हिंसा से दंडित किया। को उचित ठहराने की एक श्रृंखला है। युद्धों का यह इतिहास वर्तमान को सूचित करता है। 20वीं सदी में, विभिन्न गतिविधियों को 'आतंकवाद' का लेबल देना बल के उपयोग को तर्कसंगत बनाने का एक तरीका था। अमेरिका ने उपनिवेश-विरोधी मुक्ति आंदोलनों के जवाब में विशेष रूप से अपने सहयोगियों के साथ ऐसा किया। इसलिए दक्षिण अफ्रीकी रंगभेद शासन ने रंगभेद विरोधी प्रतिरोध को 'आतंकवाद' कहा, और इज़रायली राज्य ने फ़िलिस्तीनी प्रतिरोध के साथ भी ऐसा ही किया (और करना जारी रखा), हालाँकि वह अहिंसक था। अमेरिका ने इन राज्यों को हथियार दिए और उनका बचाव किया, 'आतंकवाद' के खिलाफ़ युद्ध की बयानबाज़ी को अपनाया और बढ़ावा दिया। 'आतंकवाद' का दूसरा पहलू - वह व्यापक दुश्मन जिसके खिलाफ़ सभी हिंसा उचित है - 'लोकतंत्र' है - वह सर्वव्यापी चीज़ जिसका अमेरिका अपनी विदेश नीति में बचाव करने का दावा करता है। लेकिन फिर से, 20वीं सदी में अमेरिका ने हर महाद्वीप पर लोकतंत्र विरोधी, तानाशाही ताकतों को गले लगाया, हथियार दिए और उनके साथ युद्ध किया। 20वीं सदी के उत्तरार्ध में सामाजिक और आर्थिक न्याय के लिए लोकप्रिय प्रतिरोध की लहरों के जवाब में अमेरिका ने लैटिन अमेरिका में दशकों तक हिंसा की और उसका समर्थन किया, जो उदाहरणों के क्रूर अध्याय के रूप में काम करता है। इन सभी चीज़ों ने उस नींव को बनाने में मदद की जिस पर बुश प्रशासन ने आतंकवाद के खिलाफ़ युद्ध शुरू किया। आपके प्रश्न का अधिक सीधे उत्तर देने के लिए, सैन्य हिंसा में हमेशा अमानवीयकरण और अधिकारों का हनन शामिल होता है - और यह अनिवार्य रूप से लोकतंत्र की किसी भी धारणा को भ्रष्ट करता है। युद्ध, वास्तव में, हमेशा बड़े पैमाने पर लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमला शामिल होता है। जब अमेरिका ने 2001 में आतंकवाद के खिलाफ युद्ध शुरू किया, तो संघीय सरकार ने एक साथ विदेशों में सैन्य अभियान चलाए और यूएसए पैट्रियट एक्ट जैसे कानून पारित किए, कानूनी दिशा-निर्देश और अन्य अभ्यास जारी किए, जिससे निगरानी के नए स्तर, उचित प्रक्रिया से इनकार, यातना को तर्कसंगत बनाना और नागरिक स्वतंत्रता पर अन्य हमले शुरू हुए। इन प्रयासों ने विशेष रूप से मुसलमानों और दक्षिण एशियाई, मध्य एशियाई, दक्षिण-पश्चिम एशियाई और उत्तरी अफ्रीकी मूल के लोगों को लक्षित किया - जिनमें से सभी को 'आतंकवादी' या 'संदिग्ध आतंकवादी' के रूप में पेश किया गया। यह ध्यान देने योग्य है कि जबकि बुश ने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध शुरू करने के लिए अमेरिकी हिंसा की गहरी जड़ों का लाभ उठाया, इसके दौरान अविश्वसनीय निरंतरता, वृद्धि और विस्तार हुआ है। उदाहरण के लिए, बुश ने ड्रोन युद्ध शुरू किया, और फिर राष्ट्रपति बराक ओबामा ने इसे बेतहाशा विस्तारित और बढ़ाया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने इसे और आगे बढ़ाया। क्या आतंकवाद के खिलाफ युद्ध की नीतियों ने नस्लीय और प्रवासी न्याय के लिए संघर्ष को भी प्रभावित किया है? आतंकवाद के खिलाफ युद्ध नस्लीय और प्रवासी न्याय के लिए विनाशकारी रहा है। अमेरिका द्वारा चलाए गए इस्लामोफोबिक घरेलू कार्यक्रम नस्लवादी हैं। और एक बार जब उन्हें आबादी के कुछ हिस्सों के खिलाफ पायलट किया गया, तो उन्हें दूसरों तक विस्तारित किया जा सकता है। अमेरिकी राज्य हिंसा इसी तरह काम करती है। वास्तव में, 1990 के दशक में बनाई गई सामूहिक पुलिसिंग, सामूहिक कारावास व्यवस्था - जिसे कथित तौर पर 'अपराध से लड़ने' और 'ड्रग्स के खिलाफ युद्ध' के लिए निर्देशित किया गया था - ने विशेष रूप से काले लोगों और लैटिनो को लक्षित किया, एक ऐसा बुनियादी ढांचा बनाया जो तब मुसलमानों और अन्य लोगों के खिलाफ आतंकवाद के खिलाफ युद्ध में तैनात किया गया था। आतंकवाद के खिलाफ युद्ध के नाम पर पुलिसिंग का व्यापक रूप से विस्तार होने के साथ, इसका बल काले और स्वदेशी समुदायों पर वापस आ गया - जैसा कि संयुक्त राज्य अमेरिका में हमेशा होता है।

टाटा जालसाज उद्योगपति के जेब में रहते हैं, सभी दलों के सारे बड़े नेता

आयकर जीएसटी कस्टम की लाखों करोड़ की टैक्स चोरी

पेज 8 का शेष

जो शरीर में पहुंच कर शरीर की रक्त बाहिकाओं को गलाने क्षरण पैदा करने से लेकर किडनी लीवर हृदय में अनेकों प्रकार की पेचीदगियां उत्पन्न कर गलाने सड़ाने से कैंसर रक्त स्त्राव या ब्रेन हैमरेज व अन्य शरीर के अंगों में पहुंच रक्तबाहिका को कमजोर कर गलाने का कारण भी बनता है। और इसके जबरदस्ती जनता को खिलाने से 74-75 के बाद धीरे-धीरे मस्तिष्क हृदय यकृत प्लीहा गुर्दों के क्षय, कर्कट, आबुर्द रोगियों की संख्या लगातार बढ़ती चली गई। और इसी की चिकित्सा व अनुसंधान के लिए टाटा कैंसर फाउंडेशन खोला गया यहां भी उस आयोडीन नमक से उत्पन्न आयुर्वेद के अनुसार 16 प्रकार केंसर में से वर्तमान में मात्र आठ प्रकार की कर्कट रोगों की चिकित्सा के लिएअनुसंधान की आड़ में वहां भी लूट का तांडव और मरीजों की चिकित्सा के बीच में अनुसंधान के नाम पर तिल तिल मौत का तांडव किया जाता रहता है। सरकार जानती है।

और उस आयोडीन नमक के खिलाफ 1972 से 80 तक जनसंघ व अन्य हिंदू दल और 1980 के बाद में भारतीय जनता पार्टी 1998 तक लगातार जनता के बीच में बने रहने के लिए जब कोई मुद्दा नहीं होता था तो वह आयोडीन नमक को बंद करने को लेकर लगातार आंदोलन करती रहती थी। 1999 से भाजपा की सत्ता में आने के बाद और सीधा ही टाटा से वसूली के बाद टाटा आयोडीन नमक के खिलाफ सारे आंदोलन समाप्त हो गए।

इससे जो टाटा केमिकल्स 1965 से लगातार 1971 तक जो सैकड़ों करोड़ के घाटै में थी वह 1972 -73 के बाद नमक में आयोडीन मिलाने की आड़ में पूरे देश के समुद्री नमक पर कब्जा कर एकमात्र टाटा केमिकल्स ने आयोडीन मिलाने की आड़ में जो 10 पैसे का 5 किलो नमक मिलता था। वह पूरे देश के नमक पर टाटा का एकाधिकार होने के कारण सीधा एक रु किलो बिकने लगा उससे कंपनी 73-74 से ही सैकड़ो करोड़ के लाभ में आ गई। पर परउसके दुष्परिणाम 7475 के बाद सामने आने लगे और लोगों को घातक कैंसर किडनी लीवर हृदय मस्तिष्क जैसी बीमारियां तेजी से फैलने लगी।

1880 से टाटा आजादी से पहले से अभी तक देश का बहुत बड़ा जालसाज आजादी के पहले अंग्रेज सरकार को और देश की आजादी के बाद से देश की चुनी हुई सरकारों को अपनी जेब में लेकर चलता है। कानून बनवाता है। जनता को लूटता है। और राजनीतिक दलों को टुकड़ा डालकर पालता है।

इसी खानदान का चिराग था। रतन टाटा, इसी की बनाई थी टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज देश की सबसे बड़ी जालसाज जो सरकारों मैं बैठे भारतीय प्रताड़ना सेवा के अधिकारियों जो देश के अघोषित प्रत्यक्ष खुदा हैं को टुकड़े डालकर देश की केंद्र व राज्यों की सरकारों के साथ हजारों करोड़ की जालसाजी पूर्ण खेल करती रहती हैं।

वर्तमान केमुख्य सचिव अनुराग जैन ने सन 2012 में टीसीएस व विप्रो के साथ मिलकर 10-20 करोड़ के प्रदेश के कोषालय, वाणिज्य कर के वेट, लोक निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय, महिला बाल विकास, पंजीयन, जल संसाधन, शिक्षा, आदि के अलग-अलग सैकड़ों करोड़ के सॉफ्टवेयर बनाने के ठेके अकेले मध्य प्रदेश में ही जो 12000 करोड रुपए के लगभग थे। दे दिये गये थे। इस बात से ज्यादा लगाया जा सकता है कि जिस वाणिज्य कर विभाग के वेट के सॉफ्टवेयर को भारत सरकार की सीएससी ने मात्र 25 लाख में साल भर में बना दिया था। जो सफलता के साथ चल रहा था। वही हाल कोषालय व लोक निर्माण विभाग का था। उसी वाणिज्य करके सॉफ्टवेयर का ठेका टीसीएस को ढाई सौ करोड़ में दिया था। यही हाल प्रदेश के अधिकांश विभागों के सॉफ्टवेयर का था सारे ठेके सैकड़ों करोड़ में थे।

टीसीएस का जो हजारों करोड़ का मुनाफा जो होता है। उसमें 90% की जालसाजी करता है। टीसीएस।

बेशक सरकार देश में कांग्रेस की हो भेड़िया झुंड पार्टी की हो या अन्य किसी दल की हो सब उनके सामने कटोरा फैलाकर चंदा मांगने के लिये खड़े रहते थे। न केवल यह सरकारों को चंदा देते थे वरन सरकारों के साथ जनता को भी मारने काटने लूटने वाले उल्फा जैसे आतंकी संगठनों से लेकर भारत में भी आतंकवादी संगठनों को भी धन दिया करते थे। जिसकी कई बार पोल खुली परंतु सरकारों को टुकड़े डालकर पालने वाले के सारे गुनाह माफ।

जहां तक समाचार पत्रों का सवाल है तो अधिकांश दैनिक बड़े समाचार पत्रों भास्कर जागरण व सभी बड़े प्रसार माध्यमों को तो टाटा की लगभग 800 कंपनियों में से हजारों करोड़ के विज्ञापन के टुकड़े मीडिया को डालकर पाला जाता था। इसलिए उसकी मृत्यु पर भास्कर कर ने अपना मुख पृष्ठ पूरा काला कर दिया। 2 दिन तकउसकी सारी जानकारी छुपा करपूरे देश के समाचार पत्र टीवी न्यूज़ चैनल शोक मनाते व जनता से मनवाते रहे।

इस महीने की शुरुआत में स्वामी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर रतन टाटा के खिलाफ कथित धन शोधन के लिए विशेष जांच दल से जांच कराने की मांग की थी।

वरिष्ठ भाजपा नेता और राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने गुरुवार को रतन टाटा को टाटा समूह के इतिहास का सबसे भ्रष्ट चेयरमैन बताया। यह पहली बार नहीं है जब स्वामी ने रतन टाटा पर हमला किया हो।

इस महीने की शुरुआत में स्वामी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर रतन टाटा के खिलाफ कथित धन शोधन के लिए विशेष जांच दल से जांच कराने की मांग की थी।

स्वामी का यह कदम साइरस मिस्त्री द्वारा टाटा संस के निदेशकों को लिखे गए पत्र की पृष्ठभूमि में आया है, जिसमें भारत के सबसे बड़े समूह के आंशिक स्वामित्व वाली एयरलाइनों में नैतिक और वित्तीय चिंताओं को उजागर किया गया था।

निदेशक मंडल द्वारा हटाए गए मिस्त्री ने वह पत्र समूह के अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान लिए गए निर्णयों का बचाव करने के लिए लिखा था तथा उन समस्याओं को भी उजागर किया था जो उन्हें विरासत में मिली थीं।

पत्र में मिस्त्री ने एयर एशिया के मामले में 'भारत और सिंगापुर में गैर-मौजूद पक्षों से जुड़े 22 करोड़ रुपये के धोखाधड़ी वाले लेनदेन' की बात की थी।

स्वामी ने कथित तौर पर कहा, 'टाटा के इतिहास में सबसे भ्रष्ट व्यक्ति रतन टाटा हैं। वह टाटा भी नहीं हैं, क्योंकि उनके पिता एक गोद लिए गए बच्चे थे।'

उन्होंने आगे कहा, 'रतन टाटा साइरस मिस्त्री के साथ अन्याय कर रहे हैं। दो महीने पहले पूरे बोर्ड ने साइरस मिस्त्री के काम की सराहना की थी और हो सकता है कि यह उनकी (रतन टाटा की) ईर्ष्या हो जिसके कारण यह कदम उठाया गया हो।'

स्वामी ने आगे कहा कि रतन टाटा 2जी घोटाला, एयर एशिया घोटाला, विस्तारा साझेदारी और जगुआर सौदे जैसे विभिन्न घोटालों में शामिल रहे हैं।

स्वामी ने कहा, 'उन्होंने घोटाले में फंसने से बचने के लिए यह कदम उठाया है, लेकिन जब भी उन पर अदालत में मुकदमा चलेगा, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा।'

सरकार से कार्रवाई की मांग करते हुए स्वामी ने कहा, 'सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए और एक एसआईटी गठित करनी चाहिए। मैंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर उन्हें उन धाराओं के बारे में बताया है, जिनमें रतन टाटा ने भारतीय दंड संहिता का उल्लंघन किया है।'

2013 में, टाटा समूह ने मलेशिया स्थित बजट एयरलाइन एयर एशिया के साथ अपने संयुक्त उद्यम की घोषणा की।

टाटा ट्रस्ट्स को कर चोरी के लिए आयकर नोटिस मिला

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की 2013 की रिपोर्ट के आधार पर आयकर कार्रवाई

आयकर (आईटी) विभाग ने टाटा ट्रस्ट के शीर्ष अधिकारियों को धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए ट्रस्टों को दी गई कर छूट के दुरुपयोग के बारे में स्पष्टीकरण देने के लिए बुलाया है। शुक्रवार को तलब किए गए टाटा ट्रस्ट के अधिकारियों ने और समय मांगा है और उम्मीद है कि वे अगले सप्ताह कर अधिकारियों से मिलेंगे।

इस घटनाक्रम की पुष्टि करते हुए एक वरिष्ठ आयकर अधिकारी ने कहा कि टाटा ट्रस्ट्स को कुछ दस्तावेज जमा करने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा, 'हम मामले में आगे की जांच के लिए आवश्यक डेटा की पुष्टि और संग्रह करने की प्रक्रिया में हैं।'

आयकर विभाग की यह कार्रवाई नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) की 2013 की रिपोर्ट के बाद की गई है, जिसमें कहा गया था कि ट्रस्ट धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग करने के बजाय भारी मुनाफा कमा रहे थे। टाटा ट्रस्ट्स के पास टाटा समूह की होल्डिंग कंपनी टाटा संस में 66% हिस्सेदारी है।

टाटा ट्रस्ट के एक अधिकारी ने कहा कि टाटा ट्रस्ट आयकर अधिनियम के तहत अनुमत आयकर का भुगतान नहीं करते हैं। सीएजी के अनुसार, रतन टाटा की अध्यक्षता वाले ट्रस्ट धर्मार्थ उद्देश्यों पर कम खर्च करके और इसे अधिशेष के रूप में जमा करके भारी लाभ कमा रहे थे। अधिशेष निधि का उपयोग अधिक लाभ कमाने के लिए अचल संपत्ति बनाने के लिए किया गया था, या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने के बजाय अन्य ट्रस्टों को हस्तांतरित कर दिया गया था। रिपोर्ट का दावा है कि ऐसा किसी भी कर का भुगतान करने से बचने के लिए किया गया था। सीएजी ऑडिट ने बताया कि जांच के दायरे में आए 22 ट्रस्टों ने 819 करोड़ रुपये का अधिशेष जमा किया है। ट्रस्टों को आयकर छूट तभी मिलती है जब वे लाभ कमाने के लिए नहीं बल्कि धर्मार्थ उद्देश्यों पर पैसा खर्च करते हैं।

सीएजी रिपोर्ट में कहा गया है कि आयकर विभाग ने जमशेदजी टाटा ट्रस्ट और नवाजबाई रतन टाटा ट्रस्ट को अनियमित छूट दी, जिसने पूंजीगत लाभ के संचय से उत्पन्न निषिद्ध तरीकों से 3,139 करोड़ रुपये का निवेश किया, जिसमें 1,066.95 करोड़ रुपये का कर प्रभाव शामिल था।

रिपोर्ट के अनुसार, जमशेदजी टाटा ट्रस्ट और नवाजबाई रतन टाटा ट्रस्ट ने कर निर्धारण वर्ष 2009 और कर निर्धारण वर्ष 2010 के दौरान पूंजीगत लाभ के रूप में क्रमशः 1,905 करोड़ रुपये और 1,234 करोड़ रुपये कमाए। इसके अलावा, उन्होंने इसे निषिद्ध निवेश के तरीके में निवेश किया, जो आयकर अधिनियम का उल्लंघन है।

रिपोर्ट में कहा गया है, 'इस प्रकार, मूल्यांकन अधिकारी को धारा 164(2) के तहत प्रावधान के अनुसार 3,139 करोड़ रुपये के निवेश को अधिकतम सीमांत दर पर कर के दायरे में लाना चाहिए था। इसके परिणामस्वरूप 1,067 करोड़ रुपये का कर कम लगाया गया।'

वरिष्ठ आयकर अधिकारी ने बताया कि कर निर्धारण अधिकारी इस आधार पर 'छूट' की पुष्टि करेगा कि व्यक्ति ने क्या आवेदन किया है। वित्त मंत्रालय ने कार्रवाई करने का वादा किया था और शुक्रवार को जारी आयकर समन उसी का हिस्सा था। सीएजी रिपोर्ट का हवाला देते हुए एक अन्य कर अधिकारी ने कहा कि कानून में ही निवेश के स्वीकार्य तरीके बताए गए हैं। यदि निवेश निर्धारित तरीकों के अलावा किसी अन्य तरीके से किया जाता है, तो करदाता छूट के अपने अधिकार को खो देते हैं।

आयकर विभाग की यह जांच टाटा समूह के लिए चुनौतीपूर्ण समय पर हुई है। ट्रस्ट के चेयरमैन रतन टाटा, टाटा समूह के नियंत्रण के लिए टाटा संस के पूर्व चेयरमैन साइरस मिस्त्री के साथ कड़ा संघर्ष कर रहे हैं। 24 अक्टूबर को हुई बोर्ड मीटिंग में टाटा संस के बोर्ड ने मिस्त्री की जगह टाटा को नियुक्त किया।

मिस्त्री को हटाए जाने के तुरंत बाद, उन्होंने टाटा पर टाटा समूह की होल्डिंग कंपनी टाटा संस के निवेश निर्णयों में हस्तक्षेप करने का आरोप लगाया। मिस्त्री ने एयरएशिया इंडिया पर 22 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी पर कार्रवाई नहीं करने का भी आरोप लगाया। मिस्त्री को हटाते समय, टाटा ट्रस्ट ने शिकायत की थी कि उन्हें टाटा संस से अपने चैरिटी कार्यों को बढ़ाने के लिए पर्याप्त लाभांश नहीं मिल रहा है। यह तब हुआ जब मिस्त्री ने वादा किया था कि टाटा संस का इक्विटी लाभांश भुगतान वित्त वर्ष 2016 में भुगतान किए गए 323 करोड़ रुपये से धीरे-धीरे बढ़कर 2020 तक 800 करोड़ रुपये हो जाएगा। मिस्त्री ने 2020 से लाभांश को कई गुना बढ़ाने का भी वादा किया था क्योंकि कई परियोजनाओं के चालू होने से टाटा संस की आय में वृद्धि होने की उम्मीद थी।

इससे पहले, इस साल दोनों ट्रस्टों ने टाटा संस में 3,951 करोड़ रुपये के परिवर्तनीय प्रतिदेय वरीयता शेयर (सीआरपीएस) भी वापस ले लिए थे, जो उनकी अवधि समाप्त होने से करीब 10 साल पहले थे। मार्च 2016 को समाप्त वित्तीय वर्ष के वित्तीय विवरणों के अनुसार, जमशेदजी टाटा ट्रस्ट के पास 24.5 मिलियन सीआरपीएस और नवाजभाई रतन टाटा ट्रस्ट के पास 15.01 मिलियन सीआरपीएस थे। 1,000 रुपये के बराबर मूल्य वाले ये सीआरपीएस अक्टूबर 2007 और सितंबर 2009 के बीच जारी किए गए थे, इनकी अवधि 20 साल थी और इनका लाभांश दर 8.25% प्रति वर्ष था।

मिस्त्री को हटाए जाने से दो दिन पहले 22 अक्टूबर को दाखिल टाटा संस की निदेशक रिपोर्ट में कहा गया था, 'ट्रस्टों, 39,515,000 - 8.25% सीआरपीएस की पूरी श्रृंखला के धारकों से प्राप्त अनुरोधों के अनुसार, बोर्ड ने उक्त सीआरपीएस के मोचन को मंजूरी दे दी और 25 मई, 2016 को उन्हें मोचन कर दिया गया और 25 मई, 2016 तक की अवधि के लिए आनुपातिक लाभांश के साथ भुगतान कर दिया गया।'

1974 में स्थापित, जमशेदजी टाटा ट्रस्ट समग्र विकास संबंधी मुद्दों पर केंद्रित संस्थागत अनुदान प्रदान करता है और इसका कार्यक्रम जनादेश सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट जैसा ही है। यह चुनिंदा जेएन टाटा विद्वानों को निःशुल्क अनुदान भी देता है। एनए सूनावाला, आरके कृष्ण कुमार, आर वेंकटरमणन और अमित चंद्रा इसके ट्रस्टी थे।

नवाजबाई रतन टाटा ट्रस्ट की स्थापना भी इसी वर्ष की गई थी और यह सर रतन टाटा ट्रस्ट के साथ मिलकर अनुदान देने का काम करता है। एनए सूनावाला, जेएन मिस्त्री, आर वेंकटरमणन और अमित चंद्रा इसके ट्रस्टी हैं।

मिस्त्री ने टाटा ट्रस्ट्स, टाटा संस और टाटा समूह की कंपनियों के लिए एक मजबूत प्रशासनिक ढांचे की वकालत की थी ताकि निवेश निर्णयों में ट्रस्टों का कोई हस्तक्षेप न हो।

टाटा संस को 1,524 करोड़ रुपये का जीएसटी बकाया चुकाने को कहा गया

यह मांग 2017 में टाटा समूह द्वारा जापानी कंपनी एनटीटी डोकोमो को किए गए 1.17 बिलियन डॉलर के भुगतान के खिलाफ उठाई गई है

अप्रत्यक्ष कर चोरी की जांच करने वाली प्रवर्तन एजेंसी ने टाटा संस से 1,524 करोड़ रुपये का माल एवं सेवा कर (जीएसटी) बिल चुकाने को कहा है। यह मांग 2017 में जापानी फर्म एनटीटी डोकोमो को किए गए भुगतान के एवज में की गई है।

टाटा जालसाज उद्योगपति के जेब में रहते हैं, सभी दलों के सारे बड़े नेता

आयकर जीएसटी कस्टम की लाखों करोड़ की टैक्स चोरी

रतन टाटा के साथ भारतीय उद्योग समूह के एक युग की समाप्ति

टाटा घराना देश का सबसे पुराना और सबसे बड़ा जालसाज उद्योगपति है। सुब्रमण्यम स्वामी के अनुसार रतन, टाटा खानदान का सबसे भ्रष्ट और जालसाज उद्योगपति था।

जिसने आजादी से पूर्व अंग्रेजों को मोटा धन देकर अपने उद्योगों को विकसित किया। परंतु आजादी के पूर्व कहीं भी किसी भी इतिहास में उसने देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को किसी प्रकार की कोई आर्थिक मदद कभी नहीं की। जैसा कि बिरला घराने ने कांग्रेस उसके नेताओं इसमें गांधी नेहरू व अन्य थे को आर्थिक सहयोग करने के लेख मिल जाते हैं। दूसरी तरफ टाटा घराना पारसी समुदाय जो मुस्लिम धर्म से आते हैं। इन्होंने अपने व्यवसाय के लिए आजादी से पूर्व और आजादी के पश्चात सभी प्रकार के छल कपट रिश्वतखोरी यहां तक की आतंकियों को भी पैसा खुलकर न केवल मुंबई में बांटा वर्णन असम के अल्फा को भी उन्होंने पैसा मार्ट कर अपने व्यवसाय को विकसित करते रहे उनके सामने देश में सरकार किसी भी राजनीतिक दल की हो। सबको चंदा बताकर इन्होंने अपने व्यवसाय को हर तरह से विकसित किया। जितनी भी 62 से ज्यादा टाटा ट्रस्ट हैं। जीएसटी कस्टम आयकर चोरी की गड़बड़ी किसी जांच की जाए तो पिछले 70 सालों में डेढ़ हजार से ज्यादा कंपनियों में लाखों करोड़ की सभी प्रकार की टैक्स चोरी कर सत्ताधीशों को जेब में लेकर चलते रहे हैं। धन खर्च करअपने तरीके से कानून बनाने में भीयह अग्रणी रहेजिसमें सबसे पहला कानून जो सामने आया वह था, इंदिरा गांधी के कार्यकाल में आयोडीन नमक कानून 1971 बनाया गया था जिसका मूल उद्देश्य टाटा को उवारना हीं था।

देश का सबसे बड़ा खानदानी जालसाज उद्योगपति रतन टाटा जिसने टाटा केमिकल में लगातार घाटा होते रहने के कारण देश में 1970 में दुनिया भर में प्रतिबंधित आयोडीन नमक का कानून मात्र उस समय 2 करोड रु खर्च कर बनवा पूरे देश में जबरदस्ती ठोक दिया गया था। जबकि उस नमक का उपयोग गलगंड या गले में घेंघा रोग में जो सबसे ज्यादा देश के छत्तीसगढ़ के बस्तर इलाके उस समय में 12 से 15 लाख लोगों, और हिमालय की तराई में लगभग 20 लाख लोगों को वह रोग आयोडीन की कमी से होता था। जबकि बाकी पूरे देश में उसे समय लगभग 40 करोड़ की आबादी में उस नमक की बिल्कुल आवश्यकता नहीं थी बाह्य रूप से आयोडीन का उपयोग केवल दर्द चोट में शरीर पर हल्के मरहम के रूप में प्रयोग किया जाता था। दूसरी तरफ आंतरिक रूप से बहुत कम मात्रा में आयोडीन की आवश्यकता को प्राकृतिक साग सब्जियों फल फूलों से पूरी हो जाती है। बाहरी सीधा भोजन आदि में इसका प्रयोग अत्यधिक घातक होता है।

(शेष पेज 7 पर)

लोक भ्रष्टाचार निर्माण विभाग

समय, कार्य विस्तार, महंगाई, सलाहकारों के नाम लूट का तांडव

पूरे प्रदेश के लोक निर्माण विभाग में प्रभार लेकर बैठाये प्रभारी सहायक कार्यपालन अधीक्षण यंत्रियों द्वारा प्रभार चुकाने किया जा रहा सभी प्रकार का भ्रष्टाचार व जालसाजियां

मध्य प्रदेश में 18 वर्ष से कुंडली जमाई बैठे शिवराज सिंह चौहान की सरकार बदलने और नए मुख्यमंत्री मोहन यादव के आने से प्रदेश की जनता को लूट भ्रष्टाचार जालसाजियों और भू कॉलोनी शराब ड्रग शिक्षा स्वास्थ्य दवा परिवहन खनन यौनाचार आदि के संगठित माफियाओं के चंगूल से मुक्त होने व कानून का राज्य स्थापित होने की कुछ आस जागी थी। परंतु उल्टा ही पूर्व से ही प्रदेश का मुख्यमंत्री जो स्वयं बड़ा भू कॉलोनी खनन शराब शिक्षा आदि का अनेकों क्षेत्रों का बड़ा माफिया होने के कारण उसने जनता को राहत पहुंचाने की अपेक्षा अनेकों तरीकों से न केवल लूटने के तरीके विकसित करने के साथसभी प्रकार के सरकारी भ्रष्ट्र अधिकारियों इंजीनियरों डॉक्टर से मोटा धन का प्रभार ले अपनी सरकार के सभी मंत्रालयों की कर्मचारियों अधिकारियों की पदोन्नति करने की अपेक्षा प्रभाव देने का खेल चला कर भ्रष्ट जलशापूर्व से आरोपित अधिकारियों कर्मचारियों को पालने पोसने व अन्य क्षेत्रों के संगठित अपराधियों माफियाओं से मोटी वसूली कर सामाजिक आर्थिक और कानूनी संरक्षण प्रदान किया जा रहा है।

यही सब कुछमध्य प्रदेश के लोग भ्रष्टाचार निर्माण विभाग में भी चल रहा है। जनता के सामने भाषण में लंबे चौड़े वादे केवल अपनी कमीशन और मोटी लूट के इरादे से किये जा रहे हैं।

अपने आका के हर आपदा में अवसर और वसूली का खुला खेल मुख्यमंत्री कार्यालय से लेकर राजधानी स्थित सभी मंत्रालयों के मुख्यालय उसे लेकर ग्रामीण तहसील विकासखंडों से जिला संभागीय मुख्यालयों तक खुलकर चलाए जा रहा है।

यही हाल कुछ मध्य प्रदेश के लोक भ्रष्टाचार निर्माण विभाग का बरसात में पूरे प्रदेश की 50000 किलोमीटर से ज्यादा लंबी सड़कों के गड्ढे भरने नई सड़के बनाने नये गड्ढे भरने पुर्न नवीनीकरण करने के 20 से 50% तक नीचे पर ठेके देने या अपने खास ठेकेदारों को को दिलवाने का षड्यंत्र न केवल इंदौर उज्जैन संभाग के 15 जिलों के बीस से ज्यादा जिलों मेंन केवल भवन एवं पथ के वरन भवन संभागों के साथ पूरे प्रदेश के 60 से ज्यादा संभागों में खुलकर चलाया जा रहा है। (शेष पेज 3 पर)

साप्ताहिक
समय माया
samaymaya.com

करोड़ों किसानों मजदूरों छोटे व्यवसायियों उद्योगों, सरकारी कर्मचारियों अधिकारियों ठेका संविदा कर्मियों के हितों की रक्षा व देशी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के षड्यंत्रों के विरुद्ध पिछले 25 वर्षों से संघर्षरत

साप्ताहिक समयमाया समाचार पत्र व samaymaya.com की वेबसाइट पर समाचार, शिकायतें और विज्ञापन (प्रिंट एवं वीडियो) के लिए संपर्क करें

मप्र के समस्त जिलों में एजेंसी देना है एवं संवाददाता नियुक्त करना है

मो. 9425125569 / 9479535569

ईमेल: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- अजमेरा एस.पी. कुमार द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13 प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 299, अम्बेडकर नगर, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
संपादकः अजमेरा एस.पी. कुमार, मो. 9425125569, भोपाल प्रतिनिधि- एस.के. भारद्वाज मो. 9425637958